

धातु.	गण.	वर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अय	१	गत्याक्षेपे (अयवा)	अयनेमृगः	इ-इ
अच	१	गतिनिन्दारभनवेषु	अचननि (वा) अचने	अ-इ
अच	१	गतिपूजनयोः	अचयति कृष्णम्	उ इ
अच	१०	न्यक्तायां वानि	अचयति	क
अद्य	१	स्वेष्टोक्तौ	अद्यति	उ
अद्य	१	गतिपूजनयोः	अद्यति (वा) अद्यने	अ उ
अद्य	१०	विशेषणे	अद्ययति	उ क
अट	१	आयामे	अटति	इ
अज	१	गर्ना (न) क्षेपे	अजति अजः	
अज	१०	भामि	अजयति	क इ
अज	७	अक्षणाकान्तिगतिपु	व्यनाक्तिविद्यांसाधु-अ- म्यनाक्तिनेष्टनामं.	प उ नि
अट	१	गर्ना	अटति पर्यटनं	-
अट	१	अतिक्रमे	अटते विप्रं यवनः	क
अट	१०	अनादरे	अटयति अटः	क
अठ	१	गर्ना	अठति	
अठ	१	गर्ना	अठते	इ क
अड	५	व्यापने	अडनोति	न र
अट	१	उद्यमे	अटति घनाय	
अट	१	अविशोभे	अटति शानं मुनिः	

धातु	गण	धर्म.	उदाहरण.	अनुसन्ध
अण	१	राज्दे	अणनि	य ड
अण	४	माणने	अण्यने	
अत	१	मानत्यगमने	अतति लोकं हरि आत्मन् आत्मा	
अन	१	वन्धने	अन्नति नृप राजा	इ
अद	२	भक्षणे	आक्षि (वाभक्षति १) मो- दक सृष्टः	त ओ
अद	१	वन्धने	अन्दति दुष्टराजा	इ
अन	४	माणने	अन्यने शत्रून् भिक्षुः	य ड
अन	२	माणने	अनिति प्राण	ल घ
अन्ध	१०	दृष्टये	अन्धयति अन्ध पा-ध.	क त
अव	१	राज्दे	अवने शिशु	क इ
अम्बर	११	मंभरणे	अम्बरतियोषि वृष्टि.	ट
अभ	१	राज्दे	अभ्यते अभ	क इ
अभ्र	१	गती	अभ्रति अभ्र	
अम	१	नतिभजनशब्देषु.	अमति	
अम	१०	गोमे	अमयति	
अम्ब	१	गती	अम्बति	
अय	१	गती	अयते-अयम्	क
अरर	११	भाराकर्मणि	अरयति रथकारो रथाय	ट
अर्क	१०	ज्वरने	अर्कयति अर्क	क

धातु.	गण.	अर्थ.	दृशद्वय.	प्रत्यय
अर्प	१	हिंसायां (अपरा) मूल्ये	अर्पति	अर्प
अर्च	१०	पूजायां	अर्चयते ( तथा ) अर्चयति	क ड
अर्च	१	पूजायां	अर्चते ( तथा ) अर्चति	इ
अर्ज	१०	प्रयत्ने ( त ) सं- स्कारे	अर्जयति धनं उपार्जनं	क
अर्ज	१	अर्जने	अर्जति धनं उपार्जनं	
अर्थ	१०	याचने	अर्थयते याचकोऽर्थं अर्थ- ना अर्थः	क त इ
अर्ह	१	हिंसायां	अर्हति ( वा ) अर्हते अ- र्हयति अर्हते	ज
अर्ह	१	भीडागतियाचनेषु	रक्षःसहस्राणि चतुर्दशा- दीन् अर्हति तीर्थं यतिः श- स्त्रधनं नार्हति चानकोपि	
अर्ह	१०	हिंसायां	अर्हयति ( वा ) अर्हयते	क ज
अर्व	१	हिंसायां गतौ च	अर्वति	
अर्व	१	हिंसायां	अर्वति	
अर्ह	१	योग्यत्वपूजनयोः	अर्हति	
अर्ह	१०	पूजायां	अर्हयति—अर्हणा	क

धातु.	राज.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अउ	१	भूषणपण्यातिचार- णेषु	अयति ( वा, अयते ) के- दां मास्येन अयति कंमाय रूप्य अयतिचोर राजा	ज
अय	१	पाण्डवे ( न ) प्री- णने	अयति	
अवधीर	१०	अवज्ञायां	अवधीरयति	क त
अश	९	ज्यासां ( त ) सं- हर्ता	अशनुते विश्वं हरिः	न ड ऊ
अश	९	भाजने	अश्नाति	ग
अंश	१०	समापाते	अंशयति द्रव्यं भानृवर्गः अंश	फ त
अप	१	दीप्तिगतिग्रहेषु	अपाति	
अम	१	दीप्यादानयो	वामुदेवं परित्यज्य थो- ऽन्यैवमुशमति ( वा ) उपामने	ष
अम्	११	उपतापे	अमूयति	ट
अम्	११	उपतापे	अमूयति	ट
अम्	११	उपतापे	अमूयति ( वा ) अमूयने	ष ट
अस्	२	भवि	अस्मि हरिः	ल
अस	४	क्षेपणे	अस्यति शरं शूरः अस्त्रं न्यासः	य ऊ १ २

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अंम	१०	समाशते	(यथांशः प्रथमागतः)	क त
अह	१०	भासे	अंहयति	क इ
अह	१	गनी	अंहने	क इ
आछ	१	आशामे	आछति चरणं वामनः	इ
आदोल	१०	आंदोलने	आंदोलयति	क त
आप	१	लभने	आपति	कृ
आप	१०	लभने	आपयति धनं जनः	क कृ
आप	९	व्याप्तौ	आप्तेति भुवनं विष्णुः	न कृ
आम	१०	गंगे	आमयति	क
आशाम	२	दृढया	मोक्षमाशान्ते मुनिः	उ
आम	२	उपवेशने	आग्नेशृंह	ल ह नि
इ	२	गनी	एति पथिकः आय	ल
इ	२	अव्ययने	वेदमयीति शिशुः	ल इ
इ	२	अपिष्टमर्गे स्मरणे	अध्वेति गोवृत्तं कृष्णः	ल
इ	१०	अनिष्टमर्गे स्मृत्या	आयापयति	क
इग	१	गनी	एगति	
इग	१	गनी	एगति	इ
इग	१	गनी	एगति	
इग	१	गनी	इगति	इ
इट	१	गनी	एटति	
इट	१	गमैश्चर्ये	इन्दति इन्दः इन्दुः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
इध	७	दीप्तौ	इधे वह्निर्दिधनेन	ग ह ई मि
इभ	१	भयाने	इभयते	क ह इ
इम्	११	इष्ट्यायां	इष्ट्यन्ति ( वा ) इष्ट्यन्ते	म ह इ
इरम्	११	इष्ट्यायां	इरउयति	ट
इरम्	११	इष्ट्यायां	इरस्यति	ट
इल	१०	प्रेरणे	प्रेलयन्ति इत्या	क
इल	६	गती ( न ) क्षये	इलन्ति पाथ एतिष्यति	श
		इषे	इला एता	
इला	११	विलोभे	इलायति	ट
इव	१	व्याप्तौ	इवन्ते विधे विष्णु	इ
इष	४	गती	इष्यन्ति	
इष	६	साक्षात्	इषिभक्तिमिरुतिविप्र	श
			इच्छा	
इष	९	आभिषेधे	इष्णात्सवं शिशु अने	ग
इ	४	गती	इष्यते	ह
इ	९	कान्ति गरिष्यामि	इति ( इत्यादि )	क
		सेवप्रमनत्वाद्नेषु		
ईक्ष	१	इक्षेने	न वामदृगिर्वैवनीयदीक्ष ने निरीक्षणं निरीक्षि त्यपि	ह

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ईक्ष्य	१	ईक्ष्यायां	ईक्ष्याते	
ईक्ष	१	गतौ	ईक्षति	इ
ईज	१	गतौ	ईजने	इ ह
ईज	१	गतौ ( तथा ) कु- त्सायां	ईजति ( वा ) ईजते	इ व
ईड	१०	स्तवने	ईडयति	क
ईड	२	मृतौ	ईडेहरिविप्रः	ल
ईत	१	बन्धने	ईन्तति	इ
ईर	२	गतौ कंपनेच	ईत्तं	समीर. ल
ईर	१०	प्रेरणे सेपेच	ईरयति गजं यन्ता	क
ईर	१	प्रेरणे	ईरति	
ईष्य	१	ईष्याथे	ईष्यति माधुं पापी ईषा	
ईश	२	ईश्वर्ये	ईष्टेराना ईशः ईश्वरः ऐ- श्वर्यं	ल ह
ईष	१	उच्छे	ईषति	उ
ईष	१	गतिदर्शनहिमा- दानेषु	ईषते पांशः	
ईह	१	चष्टायां	समीहिते धर्माय माधुः	ह
उ	१	शब्दे	अवते	ह
उक्ष	१	मिचने	उक्षति उक्षा (उक्षन्)	
उत्त	१	शोषणालम्बयोः	ओत्तानि हिमेन वृक्षः	कृ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उस	१	गती	ओसति उमा	
उव	१	गती	उंवति	६
उच	४	समवाये	उच्यति बंधूना बहु ओक	य
उछ	६	उठे	उछति धान्य	दा ६
उज	६	निशामे (अपवा) वर्जने बन्धने समाप नेअतिवामे	उजति	दा ६
उगा	६	त्यागे	उगमति स्वयं सर्प	दा
उठ	१	उपस्थिति	ओठति	
उन्द	७	मोदने	उनति गंगामलेन गात्रं यति-उदक	ध ६
उङ्ग	९	उत्तमर्गे	उङ्गति स्वयत्सर्पः उङ्गाव- कार उङ्ग	
उभ्रम्	१०	उभ्रते	उभ्रामयति कणान्बिभ्रु	क.
उक्क	९	आनिवे	उक्कति कूठ्ठां कृष्ण	दा
उध	९	पूरणे	उधति धनेनार्पणं वर्ण	दा
उंध	९	पूरणे	उंधयं	
उगी	६	उद्यमने	उगीति	दा ५
उरम्	११	वशर्पे	उरने उरम्यति	ह ६ दा ट



धातु.	गण.	अर्थ.	वडाहरण.	अनुबन्ध.
कड	१	मदे	कडनि घनेन	
कड	१०	भेदे ( तथा ) रक्षणे	कण्डयति	क ड
कड	६	मदे ( तथा ) अदने	कडति घनेन मूर्धः	डा
कड	१	मदे	कण्डने घनेन मूर्धः	ड ड
कड	१	तुपापकरणे	कण्डने तंदुलं म्यो	ड इ
कडू	१	कार्कश्ये	कडूति कृषणा	
कण्डू	११	गात्रविधर्पणे	कण्डूयति ( वा ) कण्डूयते	ध ट
			गात्रं	
कण	१	गती	कणानि काण कण	म
कण	१	शब्दे	कणानि	क
कण	१०	निर्मालने	कणयति नेत्रं	क
कत्प	१	श्लाघाया	कत्पते हरिकषां कवि	क
कत्र	१०	शैथिल्ये	कत्रयति	क न
कथ	१	श्लाघायां	कथते हरिकषां कविः	क
कथ	१०	तात्पर्यप्रबन्धे	कथयति काव्यं कथकः	क त
			कथा	
कद	१	वैह्वये	कदने	ड
कद	१	वैह्वये	कन्दते	ड इ
कद	१	आह्वानतोदनयो.	कन्दति	इ
कन	१	दीप्ती ( त० ) ग्री- निगत्यो.	कनति दीपः	इ मि

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण.	धन्यवध
कप	१	कलने	कपते	इ इ
कष	१	कर्म	कषति	उ उ
कम	१	कामना	कमते	उ उ
कम	१-१०	कामनी	कामयते	उ उ
कम्ब	१	कर्म	कम्बति	
कर्ष	१	कर्षण	कर्षति	
कर्ष	१	कर्षण	कर्षति	
कर्ष	१	कर्षण	कर्षति	
कर्ष	१०	कर्षण	कर्षयति	क. त
(आउप- मर्गे)	१	धरण	आकर्षयति	
कर्ष	१०	कर्षण	कर्षयति	क. त
कर्ष	१०	कर्षण	कर्षयति	क. त
कर्ष		कर्षण	कर्षयति	
कर्ष	१	कर्षण	कर्षयति	
कर्ष	१	कर्षण	कर्षयति	
कर्ष	१०	कर्षण	कर्षयति	क. त
कर्ष	१०	कर्षण	कर्षयति	क. त
कर्ष	१	कर्षण	कर्षयति	क. त
कर्ष	१	कर्षण	कर्षयति	क. त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कव	१	वर्णे	कवनेकविःकाव्येन हरिः कवतेचित्रकारः	कृ ड
कश	१	हिंमायां	कशति ( वा ) कशने काशः कशा	अ
कष	१	हिंमायां	कशति समूहकाशं कष्टः श टं	
कष	१०	हिंमायां	कशयति कष्टः श टं	क
कस	१	गतां	कसति विकस्वरः	ज
कस	२	गतिशामनयोः	कस्मे कंसं हरिः	छ ई ड
कास्त	१	कांक्षायां	कांक्षति कांक्षा	इ
काच	१	दोसिबध्ननयोः	काचने विभावमुः	इ ड
काळ	१०	कालोपदेशे	कालयति	क त
काश	१	दीप्तां	काशने	कृ ड
काश	४	दीप्तां	कादयने	य उ कृ ड
कास	१	दीप्तां	प्रकासने	कृ ड
कास	१	शब्दकुत्सायां	कासनेरोगी कासः( वा ) काशः	कृ ड
कि	२	ज्ञाने	चिकेति	लि र
किट	१	{ गतां ( त० ) भय- भीषयोः	किटति किटं	लि र

धातु.	शाल.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुप्रास.
किन्	१	रोगापनयने	विक्रिप्सति रोगिण दे	लि र
किन्	२	ज्ञाने-निवासेष	य विक्रिप्सा	श
किन्	६	रान्यक्रोदनयो.	विक्रिप्ति	क
किल्	१०	लेवे	विक्रिप्ति देह चन्दनेन-	क
कीट	१०	कन्धने (त) वर्गे	विक्रिप्ति केन्द्र	क
कील	१	कन्धे	विक्रिप्ति कीटयानि	क
कु	१	राब्दे	विक्रिप्ति कृष्ण माता की	क
कु	२	राब्दे	विक्रिप्ति -कीला	क
कु	६	भातिम्बरे	विक्रिप्ति कृष्णे	क
कु	९	राब्दे	विक्रिप्ति रीति	क
कु	१	आदाने	विक्रिप्ति कुवने	क
कु	१	रोधसपदकोटिल्य	विक्रिप्ति मृनाति	क
कु	१	विन्नेतनेपु	विक्रिप्ति कोकने	क
कु	१	तारशब्दे	विक्रिप्ति कोषति	क
कु	१	मंकोषे	विक्रिप्ति काशी	क
कु	९	मंकोषे	मकोषति चन्द्रात्प्रभं-	क
			मकोष	क
			सकुषति धनो रामभ-	क
			पान्	क

धातु.	रूप.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुञ्ज	१	कोटिल्यान्वीभावः	कुञ्जति गल-कुञ्जति	उ
कुञ्ज	१	योः	मनो योगी	
कुञ्ज	१	स्त्रियकरणे	कोननि नवनीतिं कृष्णः-	उ
कुञ्ज	१	अव्यक्तेशब्दे	कुञ्जनि कुञ्ज ( वा ) नि-	इ
			कुञ्ज	
कुट	१	वैकल्ये	कुण्डनि	इ
कुट	६	कोटिल्ये	कुटनि खलः कोट.	श शि
कुट	१०	प्रतापने छेदनेच	कोटयते	क ह
कुट्ट	१	प्रतापने	कुट्टनि कुट्टयति	
कुट्ट	१०	छेदने ( त० ) कु-	कुट्टयति कुट्टनी	क
		त्साया		
कुट्टम्ब	१०	घृत्या पूरणे	कुट्टम्बयते	क क
कुण्ड	१	आलम्ब्य प्रतिष्ठा-	कुण्डनि कुण्ड कुण्ड	इ
		नेच	डा ठं	
कुड	६	मार्द्य ( न० ) अ-	कुडति ज्ञानी	श शि
		दने		
कुड	१०	रक्षणे अनृतपरि-	कुण्डयति	क इ
		मापणेवेष्टनेच.		
कुण्ड	१	वैकल्ये	कुण्डति कुण्डं कुण्डं	इ
			कुण्डी	
कुण्ड	१	दाहे	कुण्डते कुण्डं कुम्भकारः कुण्डं	इ क

धातु.	सं.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुण	१०	आमन्त्रणे	कुणयति	क त
कुण	६	शब्दोपकरणयो	कुणनि काक	श
कुत्स	१०	अवशेषणे	कुत्सयते कुत्स्य साधु	क क
कुय	■	पुनीभावे	कुयति मृग	य
कुय	१	हिमामलेशयो	कुयति रावण राम	इ
कुद्र	१०	भयभरणे	रावणशरण रामो न	
कुन्ध	९	मल्लशाने ( न )	कुन्धति	क इ
कुप	९	क्रिपे	कुन्धति रोगी	ग
कुप	१-१०	मृत्तौ ( अथवा )	कुपति ( बा ) कुपयति	कि
कुप	४	स्मृते		
कुप	४	रोषे	कुप्यति ( अथवा ) कु	य इ र
कुप	१०	प्यते शोषे	कुप्यति	क
कुच	१	भाषाये कुतौ	कुम्भयति	इ
कुच	१०	जादने	कुम्भयति नृणेन गृहं कुम्भा	क इ
कुम्भ	१०	जादने	कुम्भयति	इ क
कुमार	१०	जादने	कुम्भयति	क त
कुमार	१०	जीवायां	कुमारयति गोबुले कृष्ण.	
			कुमार	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुमाल	१०	कलौ	कुमालयति	क त
कुर	६	शब्दे	कुरति चुकोर	श
कुर्द	१	क्रीडायां	कुर्दते	ह
कुल	१	बन्धुसंहतौ	कालति कुलं	
कुश	४	स्थिति	कुशयति	य इ र
कुश	१-१०	द्युतौ	कुंशति ( वा ) कुंशयति	क कि इ
कुप	९	निष्कर्षे	कृष्णाति स्वर्णं स्वर्ण- कारः कोपः	ग
कुपुभ	११	क्षेपे	कुपुम्यति कन्दुकं विलासी	ट
कुप	४	क्षेपणे	कुस्यति कामिनीं कान्तः	य इ र
कुस	१०	{ भाषार्थे ( अथवा ) भासने	कुंसयति क इ	इ कि
कुह	१०	{ विस्मरणे विस्मा- ने	कुहयते कुहको भाषया विश्वे	क त ह
कु	९	{ शब्दे ( तथा ) आ- तास्वरे	कुवने वाकः	श शि ह
कूज	१	{ अन्यक्ते शब्दे ( त० ) दिक्ने	कूजति पक्षी	
कूट	१०	अग्रमादेः परितापे	कूटयते ललः	क ह
कूट	१०	दाहे	कूटयति	क त
कूट	१०	दाहमात्रे	कूटयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कृड	१	यसने	कृडति पासं नृपः कृड	श शि
कृण	१०	मकोचे	कृणयते मेघः रोगी कृण	क त क
कून	१०	मकोचे	कूनयते मेघः रोगी कूर्नी	क त क
कृण				
कृप	१०	दीर्घल्ये	कृपयति	क त
कृद	१	क्रीडायां	कृदते	क
कृल	१	आवरणे	कृलति धर्म साधु कृलं	
कृ	५	हिसाया	कृणोति ( वा ) कृणुते	म म
			कृत युगं	
कृ	८	करणे	करोति ( वा ) कुरुते	द म ड
			रटक कारुकः	
कृम	१	भस्मने	कृमयते धान्यं	इ इ
कृद	१	यनत्वे	कृडति	श
कृत	१	छिदने	कृन्तति नृपः	श प १
कृत	७	वेष्टने	कृणोति तरुं कटेकेन मा-	ध १
			त्राकारः कृत्ति.	
कृप	१	दयायां	कृपते हरिर्भक्तं	प म क
कृप	१०	दीर्घल्ये	कृपयति	क त
कृप कृ	१	अवरुद्धने	कृपयति	



धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
कृप-कृ पृ	१	सामर्थ्ये	कल्पते मोक्षाय	ह ऊ व लृ
कृप-कृ पृ	१०	अवकल्कने	कल्पयति कल्पना	क
कृव	९	कृतिहिंसयो	कृणोति	न
कृवि	९	जिघांसायां	कृविणोति	न
कृश	■	तनूकरणे	कृशयति देहं रोमः कृश शा-शं	या इ र
कृष	१	आकर्षणे	कृषति	औ
कृप	६	विलेखने	कृपति ( वा ) कृपते सेत्रं कृपकः	श न औ
कृ	९	विशेषे	किरति कुमुदं वायुः सं- कीर्णः णा-णं	श
कृ	९	हिंसायां	कृणाति कीर्णं. णा णं	ग न गि
कृत	१०	संशब्दने	कीर्त्तयति परगुणं साधुः कीर्त्तिः	क
केत	१०	आमन्त्रणे श्राव- णचे	केतयति श्राद्धाय मुनि गृही-केतनं	क त
केप	१	गत्यां कंपनेच	केपते .	कृ ङ
केल	१	गतौ	केलति केलि.	ऊ

धातु.	संज्ञ.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
केला	११	विलासे	केलायनि विनासी कामात	ट
काव	१	निवने	केवते	न, क
का	१	राब्दे	कायति	
काय	१	हिमायां	कृषति	
काय	१०	प्रतिहर्षे	कृषयनि	क म
काय	१०	हिमायां	काययनि	क म
काद	१	गिह्मणे	कन्दते	छ इ
काद	१	आन्तरादनायो	कन्दनि आकन्दद्दश प्रीति	इ
कान्द	१०	आप्रत्यये आरं- दयान्त्यरोदने	आकन्दयति शोकं तं.	क
काम	१	सादविसेपे	कमति	उ
काम	४	सादविसेपे	काम्यति ( वा ) काम्यते शामनोमर्हति	य उ
काम	१	राब्दे	कसति	
क्री	९	द्रव्यविनिमये	क्रीणानि ( वा ) क्रीणीते तिलं यवैर्मनः क्रीतः ता- न-कयः—कयविक्रयो	ग म ड
क्रीड	१	विहारे	क्रीडति	क
कनूय	१	राब्दे उन्देच	कनूयते भरः	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अगुयन्ध.
खर्ज	१	मार्जने (त०) व्य-	खर्जति गात्रं खर्जरः	
खर्ज	१	थायां		
खर्द	१	दशने	खर्दति मूलकं बालः	
खर्व	१	गतौ	खर्वति खर्व बा-वं	
खर्व	१	दूर्पे	खर्वति मूर्धः खर्वः वा-वं	
खल	१	चलने संचयेन	खलति खलः	
खव	९	भूतप्रादुर्भावे	खोनतिमनः	ग
खप	१	वधे	खपति	
खाद	१	भक्षणे	खादति	घ
खिद	४	दैन्ये	खिद्यते खेदः	य क
खिद	६	परिधाने	खिदनि साधुं दधी खेद	श प औ
खिद	७	दैन्ये	खिसे भिक्षुः	घ ङ औ
खु	१	शब्दे	खवते	ह
खुम	१	स्तेयकरणे	खोनति नवनीतं कृष्णः	उ
खुड	१	भेदे	खोडति	
खुड	१	भेदे	खण्डति	इ
खुड	६	संवरणे	खुडनि धनं धनिकः	श
खुड	१	खण्डे	खण्डते	इ ङ
खुड	१०	खण्डने	खण्डति (वा) खण्डयति	कि इ
खुर-खुर	६	खिदने	खुरति धान्यं कृपकः खुरः	३

धातु.	सप्त.	अर्थ.	उदाहरण.	धनुषन्ध
गुदे, गुदे खट	१ १०	ज्जीहायां भक्षणे	गुदेने खटयति माम् आखेट खेट टा टं.	क त
खेट-नि ट	१	उन्ध्रामने	खेटनि केही गोष्ट भागे- टक खेट	
खेड	१०	भक्षणे	खेडयति	क
खेज	१	गती	खेटति खेज	उ
खेज	१	भेदने	खेजने	क ड
खे खे	१ १	खेदने खेदने	गायति धननाशेन लोक गायति	
खोट	१	गम्याघाते	खोटति	क
खोट	१०	क्षेपे भक्षणेष	खोटयति शरं गुर	क त
खोड	१	गति प्रतिघाते	खोडति खोड-बा ड	क
खोड	१०	क्षेपे	खोडयति	क त
खोर	१	गतिप्रतिघाते	खोरति	क
खोल	१	गतिप्रतिघाते	खोलति	क
ख्या	९	प्रकथने	ख्याति गुणेन लोक ख्याति.	ल
गघ	१	हमने	गघति	
गज	१	दाब्दे-भेदेष	गजति गज.	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गम	१	स्वने	गमति	इ
गड	१	मेचने	( डल्योरैक्यात् ) गलति नलं गाडः गाडः गडक	म
गड	१	गदनैरुदेशे	गण्डति गण्ड	इ
गण	१०	मंरुगाने	गणयति गणको ग्रहणम्	क त
गद	१	त्यक्तायां गानि	गदति	
गद	१०	मेचशाब्दे	गदयति घन	क त
गङ्गद	११	शाकम्भगळने	गङ्गयति	इ
गन्ध	१०	अर्धने	गन्धयति शुद्धो बदन्त्ये	क इ
गम्भ	१	गनी	गम्भति	
गम्	१	गनी	गम्भति	क ओ
गर्ष	१	गत्या	गर्षति गर्भ	
गर्ज	१	ताब्दे	गर्जति	
गर्ज	१०	ताब्दे अभिका	गर्जयति	क
गर्ह	१	ताब्दे	गर्हति मिहः	
गर्ह	१०	ताब्दे अभिका	गर्हयति मिहः	क
गर्भ	१०	अभिकाशायां	गर्भयति गर्भं मिथुः	क
गडवै	१	गनी	गडवैति	
गर्ज	१	दृष्टे	गर्जति गर्भः गर्भ	

धातु.	सप्त.	अर्थ.	उदाहरण	अनुपन्ध.
गर्ह	१०	माने	धर्मगर्वयेते गर्व गर्व	क त छ
गर्ह	१०	विनिन्दने	गर्हयति	क
गर्ह	१	विनिन्दने	गर्हति	
गर्ह	१	कुरसने	गर्हते पाप गर्हा	क
गल	१०	खावे	गलयते	क क
गल	१	भक्षणे ( खावे )	गलति मूलकं गलति मल	
ग्राम	१०	आमन्त्रणे	ग्रामयति	
गृह	१	कृत्स्नने	गृह्यते गृह	क
गवेष	१०	अन्वेषणे	गवेषयति हरिणं नर ग- वेषया	क त
गह	१०	गहने	गहयति गहन ना-नं-ग- हन	
गा	१	श्रुती जन्मनि	मिगाति देवान् मिगाति मुम्रयुः	छि १
गा	१	गती	गाने	ह
गाध	१	प्रतिष्ठादिष्मयो ग्रन्थे	गाधते धर्म गाधिः गाध	क क
गाह	१	विलोडने	गाहते जलं वराहः	ह उ
गु	१	शब्दे	गुयते	ह
गु	१	विलोडने	गुयति	श शि ओ
गुन	१	कृत्स्नने	गोमति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गुज	६	शब्दे	गुजानि	श शि
गुज	१	अन्यक्ते शब्दे	गुज्जति पक्षी	इ
गुठ	१०	वेष्टे	गुण्डयते	क इ
गुड	६	रक्षायां	गुडति	गुडः
गुड	१०	वेष्टने ( त० )	गुण्डयति	क इ
		रक्षणेचूर्णीकरणेच		
गुण	१०	आमन्त्रणे	गुणयति	गुणः क त
गुद	१	क्रीडायां	गोदते शिशुः	इ
गुध	१	क्रीडे	गोधने	इ
गुध	४	परिवेष्टने	गुधयति	य
गुध	९	रोषे	गुध्नाति	ग
गुप	१	गोपने	गोपते पापं	जुगुप्सा
गुप	४	व्याकुलत्वे	गुप्यति लोकं कोपः	य इ रू
गुप	१	रक्षणे	गोपायति भुवं राना	ऊ
गुप	१०	भाषाये ( अथवा )	गोपयति	क
		मासि		
गुफ	६	ग्रन्थे	गुफानि माल्यं मालाकारः	श
गुंफ	६	ग्रन्थे	गुंफति माल्यं मालाकारः	श
गुर	१	उद्यमे	गारति माता बद्धं हरि	
गुर	६	उद्यमे	गूरते धनाय वैश्यः	श शि इ इ
गुह	१	निकेतने-क्रीडायां	गुहते	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गृह्	१०	निकेतने क्रीडायां	गृह्यति	क
गृह्म	१	आहर्षे	गृह्मते घृष्टः	ट
गृह	१	संवरणे	गृह्णति ( वा ) गृह्णते	ऊ म
गृ	६	पुरापोस्तर्णे	गृह्णति रोगी गृह्	श शि औ
गूर	४	हिमायां-गर्नाय	गूर्यते रिपुं बरी	य ङ ई
गूर	१०	भक्षणे उद्यमे	गूर्यते मूलकं पान्थ.	क ङ
गृह्	१-१०	निकेतने क्रीडायां	गृह्णते ( ङ ) गृह्यति	क
गृ	१	मेघने	गरनि मेघो भूमि आ- गार	
गृम	१	ध्वनी	गर्मेति	
गृम	१	शब्दे	गृमति गृमनं गृ- मनं	इ
गृध	४	अभिक्रान्तायां	गृध्यति मार्ष्यति गृध गृधुः	उ
गृह	१०	ग्रहणे	गृह्यते गृह्यासु	क त ङ
गृ	६	निरकरणे	गिरति मूलकं पथिक गीर्णं, णा, णं	श
गृ	९	शब्दे	गृणाति गुणसाधुः	ग गि
गृ	१०	विज्ञापे विज्ञाने	गरयते	क ङ
गेप	१	गतिचालयोः	गेपते	अ ङ
गेव	१	मेघने	गेवते	ङ ञ



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	प्रत्यय.
गेष	१	अन्वेष्टयां	गेषते मुक्तिं मुनिः	कृ ह
गे	१	दाब्दे	गायति	
गोष्ट	१	मवाते	गोष्टेन घान्यं	इ
गोम	१०	उपलेपने	गोमयति गोमयेन भूमि यज्वा	क त
ग्रथ	१	कौटिल्ये-संदर्भे	ग्रथने	ह
ग्रथ	१	कौटिल्ये	ग्रथने चित्तं स्वतः	इ ल
ग्रन्थ	९	संदर्भे	ग्रथ्नाति ग्रन्थं कवि	ग
ग्रन्थ	१	संदर्भे	ग्रथयति	
ग्रन्थ	१०	संदर्भे-ग्रन्थनेच	ग्रथयति	क
ग्रस	१	ग्रहणग्रासयोः	ग्रसति	
ग्रस	१	अदने	ग्रसते ग्रासं भिक्षुः	इ उ
ग्रस	१०	अदने-ग्रासे	ग्रासयतिचन्द्रं राहुः	क
ग्रह	१-१०	आदाने	ग्रहति ( वा ) ग्राहयति	कि उ
ग्रह	९	उपादाने	गृह्णाति ( वा ) गृह्णते धर्मं धार्मिकः गृह्णाति ता ता तं.	ग उ
गुर्व	१	उद्यमने	गुर्वति फलार्थं फलाय	ई
गुच	१	चौर्ये	गुचति नवनीतं कृष्ण.	उ इ
ग्लस	१	अदने	ग्लसते	ह उ
ग्लह	१-१०	आदाने	ग्लहति ( वा ) ग्लहयति	कि उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुपन्ध.
म्लुच	१	चौर्य	म्लोचति भवनीति कृष्ण	उ इर
म्लुच	१	मनौ	म्लोचति	उ इर
म्लुच	१	मनौ	म्लुचति	उ इर
म्लेष	१	देभ्ये-गतौ-वाले	म्लेषेते भिक्षु	क्र ड
म्लेष	१	मेवने कपनेष	म्लेषते	क्र ड
म्लेष	१	अन्वितायां	म्लेषेते मुक्तिं मुनिः	क्र ड
म्लै	१	हर्षक्षये	म्लायति भ्रान्तिः	
म्लै	१	हर्षक्षये	म्लपयति	
घग्य	१	हसने	गम्यति	
घट	१	चिष्टाया	घटते घटक घटः	प म ड
घट	१०	संघतिहिंसायांघृता	घटयति कुपितजनं साधु	क
घट	१०	भाषार्थे-घृता	घण्टयति	क इ
घट्टः	१	चलने	घट्टते घन-घट्टः	
घट्ट	१०	चलने	घट्टयति तरुं पक्षी	क
घण	८	दीप्ति	घणोति ( वा ) घणुते	द उ ज
घम्ब	१	गतौ	घम्बति	
घर्ब्ध	१	गतौ	घर्ब्धति	
घप	१	क्षरे	घपते	इ ह
घस	१	भस्ते	घसति	छ आ
घस	१	क्षरणे	घसते	इ ह
घिण	१	ग्रहणे	घिण्णते	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
घु	१	शब्दे	रुक्ते	रु
घुट	१	परिवर्त्तने	घोटते प्रवर्त्तमाना	रु
घुट	६	प्रतिचाने	घुटनि गमं घोटकः	श शि
घुट	६	व्याघाते-रस्ते	घुटनि	श शि
घुण	१	भ्रमणे	घोणनं तथैव मुनिः	रु
घुण	६	भ्रमणे	घुणाति भिक्षायै भिक्षुः	श
घुण	१	ग्रहणे	घुणः	
घुर	६	भोमार्त्तिशब्दे	घुण्णने	रु इ
घुर-घूर	४	हिंसाज्ञानयो-	घुरति भयेन शिशुः घोर-	श
घुप	१	वधे	रा-रं-घोरं	
घुप	१०	वधे	घुर्यते	य रु इ
घुप	१	शब्दे	घोषति	इ रु
घुप	१०	शब्दे	घोषयति	क इ रु
घुप	१०	शब्दे	माधुर्योपति गोविंदं घोष-	इ रु
घुप	१०	शब्दे	घोषयति नीतिं जनेषु	क इ रु
घुप	१	धूसो-कान्तिकर-	रामा घोषणा	
घूर्ण	१	धूर्ण-कान्तिकर-	घुपते	इ रु
घूर्ण	१	भ्रमणे	निद्रया घूर्णति स्तिवः	
घूर्ण	६	भ्रमणे	घूर्णति भिक्षायै भिक्षुः	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
घृ	१	क्षरणदीप्तयोः	निघर्ति मलं निघर्ति घृतं घर्ति	ल इ र
घृ	१०	क्षरणदीप्तयोः प्र- मध्यकरणेच	प्र-भरयति	क
घृ	१	मेषने	परति दग्धं पयसा	
घृण	१	ग्रहणे	घृण्णने	इ इ
घृण	८	दीप्ति	घृणोति ( वा ) घृणुते	द म उ
घृप	१	मघर्षे	घर्षति काष्ठं मूलं.	उ
घोर	१	गतिचातुर्यं	घोरस्वधः	
घ्रा	१	गन्धोपादाने	निघ्रति पुष्पं भ्रमर.	
घृ	१	ध्वनी	घृते	ह
चक	१	दीप्ति प्रतिष्ठात- नृप्तयोः	चकति ( वा ) चकते	अ म
चक	१	दीप्ति	चकते विद्यया विप्र.चाक.	ह
चक	१०	व्यसने	चकयति	क
चकास	२	दीप्ति	चकास्ति.	ल म लु
चक्ष	२	व्यक्तायांवाचि	भाषते धर्मगुरुः	ल ह
चष	६	ज्ञाने	चषोति	न
चध	१	गत्यां	चधति	उ
चट	१०	भिदे ( त० ) वषे	चाटयति	क
चट	१	भिदे	चटति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चङ	१	कोपे	चण्डते चण्डे चण्डी	ङ इ
चङ	१०	कोपे	चण्डयते	क इ उ
चण	१	शब्दे	चणति	
चण	१	हिंसागत्योः	चणति	भि
चण	१	दाने	चणति चणकः	म
चत	१	याचने	चतते ( वा ) चतति चा- तकः	न उ
चद	१	याचने	चदते ( वा ) चदति	ए न
चद	१	आरुहादने दी- प्तौ च	चन्दति-चन्द्रः-चचन्द- चन्द्रोज्ज्वलचारुचितौ वि- दर्भराजो मिलने मुरारेः	इ
चन	१	हिंसायां-श्रद्धायांच	चनति	म
चन	१	शब्दे	चनति	
चप	१	सान्त्वने	चपति शिष्यं	
चप	१०	कल्के	चपयति	क म
चप	१०	गत्यां	चपति (वा) चपयति	इ कि
चम	१	अदने	चमति (वा) आचमति	उ
चम	१	अदने	आचामयति नलं पथिकः साधुः	उ
चम	५	भस्से	चम्नोति	न उ र
चम्ब	१	गत्यां	चम्बति	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चय	१	गती	चयते	ह
चर	१	गती (त०) अ- दने	चरति चारः	
चर	१०	असेशये	विचारयति भर्म पंडितः विचारणा	क
चर्च	१	गत्यां	चर्चति	
चर्च	१-१०	परिमाणनञ्जन- यो.	चर्चते (वा) चर्चयते	ह कि
चर्च	६	परिमाणनञ्ज- नयोः	चर्चति	रा
चर्च	१०	अप्ययने	चर्चयते वेदं शिशुः च- र्चा.	क क
चर्च	१	गती	चर्चति	
चर्च	१	अदने	चर्चति (वा) चर्चयति- चर्चणे	कि
चल	१	अपने	चलति (वा) चालयति नरुं कवि	म
चल	६	विलम्बने	चलति भर्त्रा नारी	रा
चल	१०	पृथ्यां	चलति	क
चप	१	रपे	चपति	
चप	१	अपने	चपति (वा) चपते चपते	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पह	१	परिकल्कने	नहति तीर्थे लोकः	
पह	१०	परिकल्कने	नहयति कपटी	क त
पाय	१	पूजानिशामनयोः	पाययति ( वा ) पायने भयं	क म
नि	१	हिंसायां	नयति	र इ र्ण
नि	१	नयने	नगति ( वा ) नयने	म
नि	५	नयने	निनोति ( वा ) निमुने	न म
			भान्यं कृणुतः	
नि	१०	नयने	नययति	क मि
विह्व	१	प्रासी	विह्वयति	क
विट	१	विट्ये	विटति भूयं वेदः वेदी	
विट	१०	विट्ये	विटयति	क
वित	१	विज्ञाने	विनति प्रत्ये हरिभवननि	ई
			विनेत रामानुजदेवः	
वित	१०	विन्या	विनयति विन्ता	क इ
वित	१०	विनयने	विनयने	क इ
वित्र	१०	वित्र्याहारणे	वित्रयति यः वित्रहार.	क ग
			वित्रः आ-त्र-वित्रं	
विट	१	विमने	विटति नैवेन मुगं वपु	श
वित	१	विमिदये (न०)	वितति मातुदेययानित	
			वितरति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वीक	१-१०	आमरणे मरणे	वीकति (वा) वीकयति	कि
वीव	१	आदान संवरणयोः	वीवति (वा) वीवने	श्रु म
वीम	१	गपने	वीमने	क ह
वीय	१	संप्रत्यादानयोः	वीयति (वा) वीयते	क न
वीव	१०	मापार्थे दीप्तौ	वीवयति	क ह
वीव	१	ग्रहमवृत्तयोः	वीवने	क ह
वीव	१	आदान संवरणयोः	वीवति (वा) वीवने	क ह
वृक	१०	व्यमने	वृकयति	क ह
वृव	१	अभिपरे	वृवति	क ह
वृय	१	जिदने	वृयति	क ह
वृव	१०	जिदने-भेदने च	वृवति	क ह
वृव	१०	जिदने	वृवति	क ह
वृव	१	अरूपीभावे	वृवति	क ह
वृव	१	अरूपीभावे	वृवति	क ह
वृव	१०	अरूपीभावे ( अ	वृवति	क ह
वृव	१	गवा ) संहता	वृवति	क ह
वृव	१	अरूपीभावे	वृवति	क ह
वृव	१०	जिदने	वृवति	क ह
वृव	१	संवरणे	वृवति	क ह
वृव	१	हावकरणे	वृवति	क ह
वृव	१	जिदने	वृवति	क ह



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुन	१	आसेचने	सोतनि	इ ई
पुन	१	निशाने	चुन्दति ( वा ) चुन्दते	उ इ र म इ
पुन	१०	संचोदने	चोदयति चोदना	क
पुन	१	संदायां गतौ	चोपतिस्रलः	
पुन		तत्कसंयोगे	चुंयति ( वा ) चुंययति	इ कि
पुन	१-१०	स्नेहे	चोरति ( वा ) चोरयति	कि
			चोरः	
पुन	४	दाहे	चूर्यते	य ह ई
पुण	११	चौर्ये	चूरण्यति	ट
पुण	१०	निमज्जने समुच्छ्रायेण	चोयति मंगायां मुनिः	क
पुण	१	हावकरणे	चोलः चोला	
			चुलानि प्रियेण नारी	
			चुली	
पुण्	१	श्लेधे	चुण्णयति	
पुण्	१०	संचोचने	चुणयति	चुण क
पुण्	१०	श्लेधे मकोचेष	चुणयति	क
पुन	१	शाने	चुपति स्नानेदिशः	
पुन	९	दिमाया ( ग० ) प्रत्ये	चुतति चयते	श ई
पुन	१-१०	संदीपने	चर्तति ( वा ) चर्तयति	कि
पुन	१०	संदीपने	चर्तयति	क

धानु. गण.

अर्थ.

उदाहरण.

अनुषंग.

बेह	१	बेहारा	बेहानं पट्टिनु	बेह	४
०, बेह	१	गती	बेमति	बेह	उ.
पु	१	गती	बने		४
पु	१०	राममहमयो:	प्याययति		क
पुन	१	भासेबने	प्योनति बहु हविः, अ		१ १
			प्युन, प्योन.		
			प्योमयति		
पुम	१०	रानी महनेब	दति		क
१	१	अपवारणे	दयति		क त
उद	१०	अपवारणे	दयति		क १ १ म
उद	१०	संकुतो	दयति पुत्रं घृतेन पि		वि. १
उद	१०	उज्जने	दति (वा) छन्दगति		क १
उद	१०	मंवरणे	दयति		उ
उप	१०	गती	ति		क
उप	१	भदने	दयत्यक्षं गेगी		धम १ १ औ
उद	१०	बमने	छिनति (वा) छिन्ते तृणं		
उद	७	देवीकरणे	शिष्यः छेदः		क त
उद			छेदयति कलशं मन		श शि
उद			ति		क
उद			यति		श
उद			नि		
उद	११	विभेदे			
उद	१	छेदे-संहतो			
उद	१०	छेदने-संहतो			
उद	१	मवरणे			

धातु.	राज.	अर्थ.	उदाहरण.	मनुबन्ध.
सृ	६	स्पर्श	सृपति	श औ
सृ	६	छिदे (त०) छेपे	सृरति	श शि
सृ	१	मंदीपने	सृदति	ई ई
सृ	१०	मंदीपने	सृदयति तेमो ऽनुनम्य हरिः	क कि ई
सृ	७	देवनपुतिवमनेपृ	सृणति (वा) सृजे	ध म उ इ र
सृ	१०	मंदीपने	सृपयति	क
छि	१०	द्विषाकरणे	छिदयति नरं नक्ष	क त
छि	४	छिदने	छयति धान्यं कृषाण	य
छि	४	गती	छयुयते	र
मस	१	दानगम्यो	मसने	इ इ म
मस	२	मसहमनयो	मसिति मुलक	छ छ लु य
मन	१	मुद	मनति	
मन	१	मुद	मनति	इ
मन	१	मननौ	मनति मर	
मन	३	मनने	मनति बीज सारक्षेत्रे	नि म र
मन			मन-मन्मा	
मन	४	मादृषीति	बीजादकुरो मायने	य य इ र
मन	१०	मनने	मनयति विध विष्णु	
मन	१	मानमे	मनति—मन—मन	
मन	१०	मनने	माययति	र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मभ	१	यमने	मभति	
जम	१	यमने	मभ्यति	इ
मभ	१	गात्रविनामे	मभते	इ
जम	१	गात्रविनामे	मभते	इ इ
जभ	१०	मादने	मंभयति मंभ शकः	क
जम	१	अदने	मभति	उ
मर्च	६	परिभाषणतर्ज्ज- नयोः	मर्चति	श
मर्त्ति	६	परिभाषणतर्ज्ज- नयोः	मर्त्ति	श
मर्त्त	६	परिभाषणतर्ज्ज- नयोः	मर्त्तति	श
मर्त्त	६	परिभाषणतर्ज्ज- नयोः	मर्त्तति	श
मर्त्त	१	परिभाषणतर्ज्जन- योः ( त० ) रसे	मर्त्तति	
मल	१	अपवारणे	मलति	ज
मल	१०	अपवारणे	मालयति विमार्गादात्मानं	क
मल			मालं	
मल	१	ल्यक्तायोवानि	मलपति	
मप	१	हिसायां	मपति ( वा ) मपते	ध

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जस	४	मोक्षणे	नस्यति वत्सं गोपः	उ इ र व
जस	१०	हिंसायां (त.) अनादरे	नासयति रिपुं राजा	क
जस	१०	रक्षणे	नंसयति	क इ
जस्	१०	नादने	नासयति (वा) नसति	उ कि
जागृ	२	निद्राक्षये	जागर्ति मुनिः	छ सु
जि	१	जये अभिषेच	जयति कृष्णः जयः	
जिम	१	अदने	जेषति	उ
जिरि	५	हिंसायां	जिरिणोति	न र
जिव	१	प्रीणने	जिवति	इ
जिवि	५	जिघांसायां	जिविनोति	न
जिप	१	सेचने	जेषति	उ
जीव	१	प्राणधारणे	जीवति हरिकषया साधुः जीवः	क
जु	१	गती	जवते जवः	क
जु	१	अंहासि	जवति	र
जुग	१	त्यागे	जुंगति	इ
जुड	६	बन्धे	जुडति जनः सूत्रेण व- त्सं, जोडः, जोडने	श शि
जुड	९	गती	जुडति जुनोड	श
जुड	१०	धरणे	जुण्डयति मृत्यं राजा	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जुन	१	भासने	जोनने विद्यया नर.	क्र ड
जुन	६	गनो	जननि	श
जुन	१०	विधि	जोत्यनि	क
जुप	१-१०	परिचक्षण (नः)	जोपनि (वा) जोपयति	कि
जुप		जुमा	भुसंयजु	ग ड ई नि
जुप	६	प्रतिनिवेशनयो	जुपन हरिभक्त	ग ई
जुप	४	जोर्ण हिमाययो-	जुपेन बुद्ध	ई
जुप		हान्यो	जुपनि	प
जुप	१	वध	जुपनि (वा) जुपने	ह ई
जुप	१	हिमाया	जुपनि	ह ई
जुप	१	ज्यजारे	जुपने	ह ई
जुप	१	गात्रविनाम	जुपने (नः) जुपति-	प म ई
जुप	१	गात्रविनाम	जुप-जुप जुपे जुपण	ग मि
जुप			जुपति जीर्ण-णा-णे	क कि
जुप	४	वयोहानो	जुपानि जरया जनः जी	क्र ड
जुप	९	वयोहानो	जुपानि-णा-णे	क्र ड
जुप	१-१०	वयोहानो	जरनि (वा) जरयति	
जुप	१	गनो	जेपते	
जुप	१	यत्ने	जेहते	
जुप	१	जये	जायति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
जि	१	अभिभवे	जयति धर्मं कलिः	
ज्या	९	उज्याने	जिणाति	ग गि
ज्ञा	९	अवबोधने	जानाति	ग
ज्ञा	१०	भक्षणोपपन्नानिशा- मनेषु (न०) स्तु- नानिज्ञानं च	ज्ञापयति रिपुं राजा ज्ञ- पयति मित्रं नरः ज्ञपय- ति पादित्य सभायां	क म
ज्ञा	१०	नियोजने	ज्ञापयति भृत्यं राजा	क
ज्ञप	१०	भक्षणोपपन्नानि नि- शामनेषु स्तुनौ च	ज्ञापयति	क म
ज्या	९	जगत्या	जिनानि	ग गि
ज्यु	१	गत्या	जयते	ह
ज्युन	१	भामने	ज्यानाति	ह ह
ज्युन	१	भामने	ज्योतने	अ ह
ज्यो	१	नियमवृत्तादेशोपा- नानिषु	जयते	ह
ज्वर	१	जगे	ज्वरत्यन्तर्जनेन ज्वर	म
ज्वर	१	दीप्ता	ज्वरति वह्निः ज्वाला	न
ज्वर	१	दीप्ता	ज्वरति (वा) ज्वाला यति वित्तं क्रायः प्रज्वा- ल्यति	
ज्वर	१	मरने	ज्वरति नैरा	—

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुपपत्ति.
अम	१	अदने	अमनि	उ
अम	६	परिभाषणतर्जनयो	अमनि	श
अम	६	परिभाषणतर्जनयो	अमनि	श
अम	१	परिभाषणतर्जनयो	अमनि	न
अम	६	परिभाषणतर्जनयो	अमनि	—
अम	१	अह	विधाने-अमनि (वा)	म
अम	१	हिंसाया	अमने	—
अम	१	गती	अमनि	र
अम	१	हिंसाया	अमनि	—
अम	४	वयोहानौ	अमनि	य
अम	१०	अन्ध	अमनि	क
अम	१	निर्दोष	अमनि	म
अम	१	गत्या	अमनि	क
अम	१०	क्षेप	अमनि	अ
अम	१	गत्या	अमनि	अ
अम	१	गत्या	अमनि	अ



धातु.	गण.	भयं.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
दृञ्	१	विहृते	दृञ्ति	न
उप	१०	संहर्ता	उपयते	क इ
उप	१०	संहर्ता	उपयते	क इ इ
उष	१०	क्षेपे	उचयति	क इ
डिप	४	क्षेपे	डिप्यति	य इ
डिप	६	क्षेपे	डिपति शर्	श शि
डिप	१०	क्षेपे	डिपयति	क
डिप	१०	संहर्ता	डिपयते	क इ
डिप	१०	संहर्ता	डिपयते	क इ इ
डिञ्	१०	क्षेपे	डिञ्ति	क इ
डिभ	१०	संयाने	डिभयते	क इ इ
डी	४	गता	डीयते पक्षी --	य इ
डी	१	विहायसागतौ	डयते गगने हंसः, प्रडी- ने, संडीने, उड्डीने	
डुञ्	१०	अदने	डुञ्ति	क इ
डुभ	१०	संयाने	डुभयते	क इ इ
णञ्	१	गतौ	नञ्ति	
णञ्	१	गतौ	नञ्ति	
णञ्	१	गतौ	नञ्ति प्रयागान् कार्शं	इ
णट(इ ति)नट	१	नृत्ये	नाटयति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	धनुषन्ध.
णट	१	नृत्ये ( त. ) हि-	णटानि	
णद्	१	गिच्छीकृतौ	नदनि	नद
णद्	१०	माषार्थे ( वा० )	नादयति	क
		माषार्थे		
णध	९	हिंसायां	नध्नानि	ग
णध	१	हिंसायां	नध्ने	नाभिः लृ ड
णध	४	हिंसायां	नध्मनि	य
णम(वा)	१	प्रवृत्तशब्दे	नमनि, प्रणमनि गुर शि-	
नम			त्यः, प्रणाम	
णय	१	रत्नणे ( न० ) गती	नयने	क
णद्	१	"	( इति नद् )	
णल	१	बन्धे-गन्धे च	नलनि	न
णश	४	भद्रीने	नदयति कामः नाशः	य लृ ड
णस	१	ईष्टिरूपे	नसने रत्न	
णह	४	बन्धने	नहति (वा) नहने	य म ओ
णाप	१	"	( इतिनाथ )	
णाप	१	प्र	( इतिनाथ )	क
णास	१	राब्दे	नामने नामा	कृ ह
णिम	१	नाम्ने	नेनेति (वा) नेनेत्ये म-	ले, र, म, ओ
			नेन वत्सं निर्णेजनं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
णिज	२	ध्रुद्धो	प्रगित्ते जन्नेन गावं	ल इ ङ
णिद	१	कृन्मायां (त.)	नेदति (वा) नेदने पापि-	क ङ
		मालिधौ	न साधुः नियने	
णिद	१	कुन्सने	निन्दानि इति निद	इ
णिल	६	गहने	निश्रुति	श
णिव	१	मेके	निश्रुति	इ
णिश	१	समाधौ	नेशतिमुनिः निशा	
णिप	१	मेके	नेपति	उ
णिस	२	चुंयने	निस्ते हरिमुत्तं मन्दः	ल ङ ई
णी	१	प्रापणे	कृष्णं मधुरां नयने (वा)	अ
			नयत्यक्रः नयः नाय-	
			नीति नायकः	
णाल	१		( इतिनील )	
णाव	१		( इतिनीव )	
णु	२	स्तुतौ	नीति	ल
णुद	६	प्रेरणे	नुदति (वा) नुदने पठ-	श न औ
णु(अ.)	६	स्तवने	नाय पुत्रं पिता	
णु-			नृवति हरिं मुनिः	श शि
णेद-इ	१	कृन्मायां (त.)	नेदति (वा) नेदने	क ङ
ने गिद		मालिधौ		

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जेय	१	गती	नेपते	ध ४
तक	१	महनहामयो	नकति	
तक	१	गती	नकने	४ ६
तक	१	कृच्छ्रमिवने	नकनि	६
तक्ष	१	मनूकरणे स्वचनेष	तक्षनि वृक्षं तक्षा	ऊ
तग	१	गतिक्पस्त्रलेनपु	तगानि	॥
मंष	७	मंकषी	ननक्ति	ध
मंष	१	मनौ	नषनि	उ
मंस	७	मंकोषे	ननक्ति	ध उ
मट	१	उच्छ्राये	नटनि तट	
तट	१०	आहतौ	नटयनि	क
तड	१०	आपाने ( त. )	नाडयनि ताम्र ताम्रकार	क
		रिवापि		
तड	१	माडने	नण्डनेरिपु	४ ६
मंनम्	११	दूरे	मंनयनि	ट
तद्	१	हरुपाणे	तन्दते गृहे नरः	६
तन	८	विस्तारे	मनोनि (वा) तनुने तन्म	द म ऊ
			तन्नुवाप विमान.	
तन	१-१०	श्रद्धोपतापयो	तननि (वा) तानयनिता	कि उ
		( तथा ) उपकृता	निवाकयजन. विमान-	
		श्रद्धावातिशब्देष	यनि	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तप	१	मनापे	तपति तापः	औ
तप	४	ऐश्वर्ये	तप्यते सैन्या राजा	य इ औ
तप	१-१०	दाहे	नपने (वा) तापयने	कि इ
तंब	१	गती	तंबति	
तम	४	ग्लानौ ( त० )	ताम्यति दुराचारेण विप्रः	यम इ उ
		दृच्छायां		
तप	१	गतिरक्षयो	तपते	इ
तरण	११	गती	तरण्यति	ट
तप्र	१०	कुटुंबमरणे	तन्त्रयते कुतन्त्रेण कुमनिः	क इ क
तर्क	१०	मापार्थे दीप्तिवर्क	तर्कयति	क
		योश्च		
तर्ज	१	तर्जने	तर्जति तं तनूनि नित्यात्मनः	
तर्ज	१०	तर्जने	तर्जयते	क इ
तर्द	१	हिंसायां	तर्दति तनूदं	
तर्ब्ज	१	गती	तर्ब्जति	
तल	१-१०	प्रतिष्ठायां	तलनि (वा) तालयति दे- वालये राजा तलः तालुः	कि
तप्त	४	उत्प्रेषणे	तप्यति महो महं वि- तप्तिः	य उ इ
तप्त	१-१०	अलंकारे	तप्तनि (वा) तप्तयति उ- त्तप्तः अवतप्तः	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तप्	४	उपशये	नस्यति	उ य
ताय	१	मंनाने पालने च	तायते धर्मं साधुः	क ड
तिक, ती	१	गता	नेकते	क ड
क				
तिक्	५	निपासायां	तिक्कोनि	न
तिग	५	निपासाया (त.) मन्त्रन्दनेन	तिग्गोनि	न
तिथ	६	गानने	निघ्नोनि	न
तिज	१	निशाने क्षमायां च	नितिशते खल साधु.	क
तिज	१०	निशाने	नेजयति शूलं भट्टः तं मना	क
तिप	१	क्षरणे (त.) द्युति	तेपते जल घटान्	उ क ड
तिम	४	भार्द्रभावे	तिम्यति तैलेन देह	य
तिल	६	स्नेहने	तिलति तैलेन गात्रं तिल	श
तिल	१०	स्नेहने	नेलयाति तैलेन देहं मन	क
तिल (वा)	१	गता	नेगति	
तिष्ठ				
तिरम्	११	अनर्द्धी	तिरम्यति कुटिलो वाक्	ट
			उपनना	
तीक	१	गता	तीकने	ड क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	धनुबन्ध.
तीम	४	आर्द्रभावे	तीम्यति नैलेन देहः	य
तीर	१०	समाप्ता	तीर्यति तीरं	क त
तीक्ष्ण	१	स्यारूपे	तीक्ष्णति	
तु	२	गतिवृद्धिवृत्तिहिमा	तीति	ल
तुज	१	पुत्तपु		
तुज	१०	हिमायां	तोजति तुजोऽ	क इ
तुंज	१०	भाषार्थे	तुंजयति	क इ
तुंज	१०	हिमायां	तुंजयति	क
तुम	१०	हिमावन्नादान	तोजयति	
तुंज	१	निकेतनेषु		
तुंज	१	हिंसाचन्द्रेषु—	तुंजति तुंगः तुंगी	इ
तुंज	१	नप्राणनेषु		
तुट	६	कण्टककर्मणि	तुटति खलः पित्रा मह	श शि
तुड	१	तोडने	तोडति जरासंधं भीमः	श
तुड	६	तोडने	तुडति बन्धनं हस्ती	श शि
तुड	१	तोडने (न.) वधे	तोडति	
तुड	१	अनादरे	तुणं तुण्डं	इ इ
तुण	६	काटिस्थे	तुणति मलः	श
तुण्य	१०	स्तृता	तुण्यति	क त

घानु.	मण.	मर्थ.	उदाहरण.	धनुषन्ध.
	९	व्यपने	तुदति (वा) तूदने विधु	श न ओ
	१	नेष्टायां	तूदो विधुं तांघ	इ
	१	वधे	तुन्दनि मृत्वाय तूदं	
	१०	तदने	नोपनि	व इ
	९	हिमायां	तूयनि	श प
	९	हिमाया ( त० )	तूपनि	श
	१	क्रिदि	तूपनि	श
तुप	१	वधे	तूफनि	श
तूफ	९	हिमायां	तूफनि	कि
तूफ	९	हिमाया	तूफनि भोजने-विप्र.	ल
तूफ	९	तूमो	तूफनि ( वा ) तुंयनि-	य
तूव	१-१०	अदने अदशनेच	तूंधी	ग
			नोभने	नि
तुभ	१	हिमाया	तूभयनि	
तुभ	४	हिमायां	तूभानि	
तुभ	९	हिमाया	तूभेति मुठ्ठो, पनाग	
तुर	१	त्वरणे	तूरितं, तूरा, तूरग, तूरग	
तुरण	११	त्तरायां	तूरण्यनि	



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तुर्व	१	हिंसायां	तुर्वति	ई
तुल	१०	पूग्णे	तोलयते	क ड
तुल	१-१०	उन्माने	तोलति (वा) तोलयति कांचनं जनः तुल्य	कि
तुप	४	तुष्टौ	तुप्यति तुष्टः, टा, टं, तुष्टिः	य लृ औ नि
तुस	१	शब्दे	तोमनि	
तुह	१	अर्दने	तोहति	इ र
तूड	१	अनादरे, तोडनेच	तूडति	ऋ
तूण	१०	मंकोचे	तूणयति	फ त
तूण	१०	पूरणे	तूणयते, तूणः, तूणा, तूणी, तूणीरः	क ड
तूर	४	चरणे, हिंसाया	तूर्यते याचकः	य ड इ
तूल	१	निष्कर्षे	तूलतिकनकं तूलिका	
तूप	१	तुष्टौ	तूपनि कृष्णः	
तृस	१	गती	तृसति तृसः ताक्ष्यं	
तृण	८	अदने	तृणोति (वा) तृणते तृ- णं वृषः	द ष उ
तृद	७	हिंसादनयोः (त.) अनादरे	तृणात्ति (वा) तृत्ते	प ञ झ ऐ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण	अनुबन्ध.
तृप	१-१०	प्रीणने ( त ) से- हृष्यसेमर्देष	नर्पयति ( वा ) नर्पयति हृषिषा बन्धि विप्र	कि
तृप	४	प्रीणने	तृप्यति पयसा बाल तृ- प्ति तर्पण	य मि उ
तृप	५	प्रीणने	तृप्नोति	न
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श प
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श
तृफ	६	तृप्नो	तृफति भोजने विप्र	श
तृप	४	पिपासाया	तृप्यति पानक तृद् तृपा तृप्णः पा-ण-तृप्णा	य इर मि श ऊ
तृह	७	हिंसाया	तृणेति रिपु जन	ध ऊ
तृह	१	तृद्धी	तृहति	इ
तृह	१	हिंसायां	तृहति	श ऊ
तृ	१	तरणाभिष— तृप्यनेषु	तृगति गगा पतिरः तर- णि तरणी तरि तरी	
तृ	९	हिंसायां	तृणाति	
तृ	९	हिंसायां	तृणाति ( वा ) तृणीते	म ग
तेप	१	कम्पेक्षणे	तेपते	म ड
तेप	१	दुःखान्न	तेपते	म ड
तेप	१	देवने	तेपते	
तोड	१	भनादरे	तोडति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तौक	१	गनी	नोकने	क. ड
प्रक	१	गनी	त्रंकने	ह ड
प्रग	१	गनी	प्रमनि	
प्रख	१	गनी	प्रमनि	ड
प्रग	१	गनी	प्रंगनि	इ
प्रद	१	घट्टायां	प्रदनि	
प्रप	१	छजायां	प्रपने वधूः	अपा उ, ड, प, मि
प्रस	१	उद्देगे	प्रमनि	धू. ण
प्रस	४	उद्देगे	प्रम्यति खलत्साधु	य
प्रम	१०	निवारणे(त) ग्रेह- निषेधेष्टुना	प्रमयति शत्रुं गूरः	क
प्रस	१-१०	भाषार्थे(वा)माप्ति	प्रंसनि ( वा ) प्रंसयति	कि इ
वुट	४	छेदने	वुटयति	य
वुट	६	छेदने	वुटनि	श शि
वुट	१०	छेदने	वुटयते	क ड
वृप	१	वधे	वृपनि	
वृप	१	वधे	वृपनि	
वृफ	१	हिमायां	व्रोफनि तम्करो धनाय	
व्र	१	पालने	पाये	ह
व्रीक	१	गनी	व्रायने व्रीकने	क ड

धातु	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
त्वक्ष	१	तनुकरणे	त्वक्षनि वृक्षे	
त्वक्ष	१	त्वचोग्रहे	त्वक्षनि	
त्वग	१	गनिकम्पयोः	त्वगनि	इ
त्वच	६	मवरणे	त्वचनि दोषं दानेन दा- ना. त्वचं, त्वक्, त्वचा	श
त्वंच	१	गती	त्वंचनि	उ
त्यज	१	हानौ	त्यजनि गृहं यतिः त्याज.	औ
स्वर	१	सम्भ्रमे	स्वरं भोजनाय स्वरा	मि प म ढ
स्मर	१	उभ्रगती	स्मरनि स्मरं स्मरु	
त्विप	१	भागे	त्वेपति ( वा ) त्वेपते	औ म
धुड	६	मवृत्तौ	धुडति	श शि
धुव	१	हिंसायां	धुर्वनि	ई
दक्ष	१	हिंसायां	दक्षते	म प ढ
दक्ष	१	तृद्धा(त.) म्यंद्रे	दक्षने धर्मेण दक्षः	ह
दण	१	घातने	दणति	इ
दण	५	घातने-पालनेच	दणोनि	न
दंड	१०	दंडनीपःतने	दण्डयति दण्डयं राजा दंडः	क त
दद	१	दाने(त.) धृनौ	ददने	ह
दध	१	पाशे(त.) दाने	दधने	उ



धातु.	सप्त.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
दह दा	१० १	दासा-दाहेष राने	दहयति ददानी गा विप्राय (अ- थवा) दत्ते, आ उपसर्ग आइत्त	क इ डि ह डु
दा दाणइ- तिदा दान	२ १ १	उषने राने अवगण्डने(अथवा) भाज्ये	दाने दायेण धान्यं अच्छान धने विप्राय दीशमति ( वा ) दीरा- मने वाष्ट वर्यकि	छ प उ ड
दाय दाश	१ १	दाने राने	दायने दाशति (वा) दाशने वि- प्राय वय	प्र ड प्र म
दाश दाश दास	१० ५ १	दाने हिमने राने	दाशयने दाशनोति दामति ( वा ) दामने दास.	क प्र ड न र प्र म
दास दिप दिप दिम	१ १० १ १०	निपांसायां(त.)वधे मषाने मंवाने नोदे	दास्नोति रिपुं दिपयने दिपति ( वा ) दिपते दिभयति	न र क ड अ क इ



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	शानुबन्ध.
दृ	५	उपलक्षणे अनुलोपे	दृनोति येन कामेन दृश-दाव-	न दृ औ
दृ-प	१०	लक्षणाया	दृश्यति	य न
दृ-प	११	लक्षणाया	दृश्यति	ट
दृ-व	९	हिमाया	दृवति	इ
दृ-ल	१०	उन्नेषे	दृल्यति मृण वायु, दृल्य, दृष्टि, दृल्य	फ
दृ-प	४	दृष्ट्या	दृप्यति दृष्टमंगत्या माधु- दाव दापण, दृरणं	य इर औ
दृ-र	१	भरणे	दोहति	इर
दृ-ह	२	प्रपूरणे	गा दोगिष वगो गोष दृग्ध-दृदोह गा महकाय	ल औ
दृ	४	परितोष	दृग्धने परदु गेन माधु-	य ङ औ
दृ	६	आदाने	आद्विगते माधुगनिधि आदरः आदृत ता त	श ङ
दृ-प	१०१	दर्शने	दर्पति ( वा ) दर्पयति	कि
दृ-प	४	दर्पणवयोः मोहने	दृप्यति	यञि ऊह
दृ-प	६	दापने	दृपति	श
दृ-प	१	दापने	दृपति ( वा ) दृपेन	ल
दृ-प	१०	संघाते	दृपयते	क ङ
दृ-फ	६	संज्ञे	दृफति रिपु राना	श प



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
दफ	६	मंकेरो	दुफति रिपु राजा	श
दुभ	६	अगे	दुगति गाल्यं	श
दुभ	१-१०	भये	दर्भानि ( या ) दर्भयति	कि
दृवा	१	प्रेसणे	पश्यति	र ओ
दृह	१	गृह्णा	दर्शति	
दृह	१	धृह्णा	दृहति	इ
दृ	०	भये	दृणानि	ग गि
दृ	१	भये	दृति	म
दृ	९	विदारणे	दृणाति	ग गि
दृ	४	विदारणे	दृयति	य
दृ	९	निमाया	दृणानि	न
दृ	१	ग्राहने	दान दयते	ह
दृ	१	शरणे	देयति	प्र
दृ	१	देवने-परिदेने	देवने देव स्वर्ग	क क
दृ	१	ग्राहने	दायति मयेन देह	प
दृ	४	अश्वदने	दिर शशोरथयति	य
दृ	६	अभिगमने	यानि रामो भराम	ल
दृ	१	दृष्टा	याने	ल क
दृ	१	दृष्टकरणे	दायति मठं तानु	
दृ	१	दृष्टा	दमति	
दृ	११	दृष्टिकाने	दृष्टयति	ह

धातु.	गण.	धर्म.	उदाहरण.	अनुपन्ध.
द्रा	२	सुत्ताया ( त० ) सदायने	द्रानि निद्राया निद्रालु	
द्राश	१	शेखाभिने ( त० ) सासे	द्रासति	ई
द्राग	१	पोषणाप्यमथयो	द्रागति हिमेन वृक्ष.	प्र
द्राघ	१	भायामे-मामर्थ्येन	द्राघने मोरो मुनि ध-	प्र ड
द्राढ	१	विदारणे	मायामशक्तिपु द्राडते पुष्प	प्र ड
द्राह	१	नागरे, निक्षेपेन	द्राहते	प्र ड
द्रु	१	गता	द्रवति संह द्राव	
द्रु	१	अनुनासे	द्रवति	र ण
द्रुट	१	मउने	द्रोडति	
द्रुड	६	मउने	द्रुडति	श शि
द्रुण	६	गता, नैमे, वडे	द्रुणति हय द्रुणे	श
द्रुह	४	गिषासायां	द्रुयति रिपुं रामा द्राहः	य ल उ
द्रु	९	हिमायां-गता	द्रुणाति ( वा ) द्रुणाति	ग म
द्रुक	१	राजदेवसाहयो	द्रुक्ते युद्ध वीरः	प्र ड
द्र	१	स्वप्ने	द्रायति रात्रौ लोकः, निद्रा, निद्रालुः	
द्रु	१	स्यगने	द्ररति	

क्र.सं.	वर्ग	प्रश्न	उत्तर	अवधि
१	१	प्रश्न १	उत्तर १	१०
२	१	प्रश्न २	उत्तर २	१०
३	१	प्रश्न ३	उत्तर ३	१०
४	१	प्रश्न ४	उत्तर ४	१०
५	१	प्रश्न ५	उत्तर ५	१०
६	१	प्रश्न ६	उत्तर ६	१०
७	१	प्रश्न ७	उत्तर ७	१०
८	१	प्रश्न ८	उत्तर ८	१०
९	१	प्रश्न ९	उत्तर ९	१०
१०	१	प्रश्न १०	उत्तर १०	१०
११	१	प्रश्न ११	उत्तर ११	१०
१२	१	प्रश्न १२	उत्तर १२	१०
१३	१	प्रश्न १३	उत्तर १३	१०
१४	१	प्रश्न १४	उत्तर १४	१०
१५	१	प्रश्न १५	उत्तर १५	१०
१६	१	प्रश्न १६	उत्तर १६	१०
१७	१	प्रश्न १७	उत्तर १७	१०
१८	१	प्रश्न १८	उत्तर १८	१०
१९	१	प्रश्न १९	उत्तर १९	१०
२०	१	प्रश्न २०	उत्तर २०	१०
२१	१	प्रश्न २१	उत्तर २१	१०
२२	१	प्रश्न २२	उत्तर २२	१०
२३	१	प्रश्न २३	उत्तर २३	१०
२४	१	प्रश्न २४	उत्तर २४	१०
२५	१	प्रश्न २५	उत्तर २५	१०
२६	१	प्रश्न २६	उत्तर २६	१०
२७	१	प्रश्न २७	उत्तर २७	१०
२८	१	प्रश्न २८	उत्तर २८	१०
२९	१	प्रश्न २९	उत्तर २९	१०
३०	१	प्रश्न ३०	उत्तर ३०	१०

धातु.	वर्ण.	वार्थ	उदाहरण.	अनुपम
वि	१	धीणने ( त० )	धिनोनिह्येन हिरण्य-	न इ
वि	३	गता	नितमं	ति इ
धी	४	नाब्दे	दिधोष्टि	य इ औ
धु	५	अनादरे ( त )	धीयते साधुं राज	न म
धु	६	अधारे	धुनोति ( वा ) धुनुतेशा	मि
धु	७	हंपने	धुनं वात	श शि
धु	८	ध्वेयं ( तथा ) म	धुवति धुव	य ई न
धु	९	विणे	धुवति	ई
धु	१०	स्वये-संपणेव	धुवति	न म
धु	११	हिमाया ( न )	धुवति	श शि
धु	१२	गता	धुवति	य ई न
धु	१३	हिमाया	धुवति	ई
धु	१४	हंपने	धुवति	न म
धु	१५	नक्षत्रं मने	धुवति	श शि
धु	१६	हंपने	धुवति	य ई न
धु	१७	विधुनने	धुवति	ई
धु	१८	हंपने	धुवति	न म
धु	१९	विधुनने	धुवति	श शि
धु	२०	हंपने	धुवति	य ई न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धू	१०	कपेन	धावयति ( वा ) धावय- नि धूनयति ( यथा ) वायुर्वधूनयति केसर- पुष्पजातं.	क ल
धूक्ष	१	मंदापनेजीवने-रू- क्षमेच	धूक्षते बान्धिः काष्ठेन	ह
धूप	१	मनापे	धूपायति	
धूप	१०	भाषार्थे ( त० ) दाप्नोति	धूपयति	क
धूना	—	—	इति धूस ( तथा ) धूप	
धूप	१०	धूषे	( इतिधूष )	क
धूप	१०	महती हिमे	धूषति	उ
धूम	१०	सान्निकरणे	धूमयत्यंगं कुंकुमे जनः	फ
धू	१	वाग्णे	धरति ( वा ) धरते, धूरं, धुस्यं: धूरंधरः	म
धृ	१०	धृता	धारयति	क
धृ	६	अवम्याने	ध्रियते यावदेकोपि रिपुं	श ह
धृ	१	हृत्ते	धरति	
धृ	१	मेघने	धरति मेघो भूमि	
धृ	१	अवधमि	धरते	ह
धृज	१	गती	धर्नति	

धातु.	संख्य.	कार्य.	उदाहरण.	धनुयन्त्र
धृज	१	गती	धृजति	इ
धृप	१-१०	ग्रहमने-अमर्षेण	धृपति ( वा ) धर्षयति	कि
धृप	१०	राक्षि.बन्धे	धृष्टो धामिक	
धृप	९	मागस्म्यं	धृपयते	क इ
धे	१	राने	धृष्णाति सभायां देवद-	न मि आ
धेक	१०	दर्शने	त धृष्ट, टा टं	
धोर	१	गतिवातुर्थ्यं	धयति वत्सो धेनुं	ट
ध्या	१	शब्दाभिसंयोगयो	धेकयति कपर्दिन शैव	फ
ध्यास्त	१	गोरवासिने ( त० )	धोरत्यथ.	
ध्यास	१	कासे	धमति शतं कृष्ण -	
ध्यै	१	विनायां	धमति लोहं लोहकारः	
ध्रज	१	गती	ध्यांशति ध्यासः	इ
ध्रज	१	गती	ध्यायति हरिं यतिः	
ध्रण, ध्रण	१	ध्याने	ध्यानं	
ध्रस	९	उत्सेपे-उच्छे	ध्रजति	इ
ध्रम	१०	उत्सेपे	ध्रजति ( तथा ) ध्र	
			णति	
			ध्रजति	ग उ
			ध्रसयति	फ

धातु.	गण.	सर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्त.
प्राक्ष		चोरणासिने (त०)	प्राक्षति	इ
	१	कांते		
प्राख	१	सापणाळमर्थयो	प्राखति हिमेन वृक्षः	क
प्राध	१	राको	प्राधति	क
पाड	१	विशरणे	प्राडने पुण्यं	क
भिग		गती	भिगति	
ध्रुव	१	गतिम्यैर्ययो	ध्रुवति	श
ध्रू	१	गतिम्यैर्य	ध्रुवति	श शि
भ्रोक	१	राब्देऽत्माहयो	भ्रोकने	ह
भ्रै	१	गती	भ्रायति	
ध्वज	१	गती	ध्वजति	ध्वज
ध्वज	१	गती	ध्वजति	इ
ध्वग	१	ध्वाने	( इति ध्वन )	
ध्वन	१	राब्दे	ध्वनति ध्वनि ध्वन	मि
ध्वन	१०	राब्दे	ध्वनयति ध्वनः ध्वनि	क त
ध्वन	१०	राब्दे कषे	ध्वनयति धनुद्धन्वी ( वा ) ध्वानयति ( यथा ) ध्वा- नयति वृक्षं वायुः	क
ध्वम	१	गती चूणेने भं-	ध्वमने	उ ह ल
		राष		
धृ	१	गती, कौटिल्येष	धरति वरां अजर	

धातु.	संख.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
प्राश	१	पोरवामिने	प्राशति	इ
नक्ष	१०	नाशने	नक्षति	क
नस	१	मपणे	नसति	नस
नज	१	विष्टे	नजते	इ ओ क
नट	१	नृत्ये ( त० ) हि माया	नटति नट.	
नड	१०	अवस्थाने, भ्रंशे, दीर्घाव	नाटयति हस्म नदी	क
नड	१०	भ्रंशे	नाडयति	क
नद	१	अत्यक्तेशब्दे	नदति नदी	
नद	१	मगृही	नन्दति-नमन्द पारिलव- नेत्रया मृप- नन्देत चतु ठ पुंसी	इ टु
नम्ब	१	गती	नम्बति	
नम	१०	नस्या	नामयति ( वा ) नमयति	
नम	१	प्रवृत्तेशब्दे	नमति, मणयति गुरुं शि- ष्यः, नमस्कारः	
नय	१	गती	नयते	ट
नर्द	१	दाब्दे	नर्दति ननर्दनामुरः सेतपि	
नर्व	१	गती	नर्वति	
नल	१०	अपवारणे	नालयति ( वा ) नलति	कि



धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	धतुबन्ध
नल	१०	दीर्घा	नालयति	क
नह	४	बन्धने	नहति ( वा ) नहने	य म औ
नाय	१	याञ्चोपतापैश्वर्यामीः पु	नायते ( तथा ) नायति ( यथा ) नायतिमल साधुं नायति याचकोविदा- न्यं नायः	क
नाय	१	याञ्चोपनापैश्वर्यामीः पु	नायते	क ड
नित्त	१	चुम्बने	नित्तति मुत्तं	
निद्	१	कृतसायां	निन्दति निन्दा	इ
निप	१	मन्त्रने	निपति	उ
निष्क	१०	परिमाणे	निष्कयते निष्कः	क ड
नीत्र	१	वर्णे	नीत्रति पंड नीलः नीली	
नीव	१	स्त्रोत्ये	नीवति	
नूड	६	वेद्ये	नूडति	श रि
नृत्	४	गात्रविज्ञेये	नृत्यति नर्तकः	य
न	१	नेये	नरति	म
नृ	९	नेये	नृगति नरं रागा	ग गि
पक्ष	१०	परिग्रहे	पक्षयति पक्षः	क क त

धातु.	गण.	सार्ध.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पच	१	राके	पचानि ( वा ) पचने पचा पाक पचन पका का कः	ज ओ प
पच	१	व्यञ्ज्यकरणे	पचने गुणं वति	ह ओ
पच	१	व्यञ्ज्यकरणे	पचने	इ इ
पच	१०	व्यञ्ज्यकरणे	पचयति पाञ्जिका भिक्षु	क इ
पट	१०	अने ( त० ) वेष्टने	पटयति मास्य मास्यरार	क त
पट	१०	भाषाया-त्विपि	पाटयति	क
पठ	१	गती	पठति	क
पठ	१	व्यञ्ज्यकरणे	पठति पाठं पाठकः	क
पठ	१०	महत्तो	पठयति	क इ
पठ	१०	महत्तो-नाशनेष	पण्डयति	क इ
पण	१	गती	पण्टते पण्डा पण्डितः	क
पण	१	व्यवहारे ( त० )	पणते वणिगापणे पण	क
पण	१०	व्यवहारे	पणायते हरि विप्रः	क
पण	१	गती	पणयत्यापणे उपसर्गेष	क त
पण	१	गत्यां ऐश्वर्ये	पाणयति	क त
पण	४	ऐदये	पतति	क त
पण	१	गती ( त० ) ऐदये	पत्यते	क त
पण	१	गती	पतयति पतं गोगमने	क त
			पयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
पथ	१०	गता	पथययनि	पांथ क इ
पथ	१०	प्रसेपे	पाथययनि	क
पद	१	स्थस्ये	पदति	ए
पद	॥	गतौ	पद्यते	य रु औ
पद	१०	गतौ	पद्यते	क त ड
पन	१	व्यवहारे ( न० )	पनने वणिगापणे इति	
पंपम्	११	स्तुतौ	पण पनायनि हरिं विप्र	ट
पंव	१	दुःखे	पपस्यति गदेनार्तः	ट
पय	१	गतौ	पंवति	
पयम्	१	गतौ	पयते	ड
पर्ण	११	प्रसूतौ	पयम्यनि	ट
पर्ण	१०	हरिभावे	पर्णयनि तरुपर्णं भेष	क त
पर्ष	१	गतौ	पर्ण, पर्ण	
पर्ष	१	कुत्सितेशब्दे	पर्षयति	
पर्ष	१	व्यवहारे, स्तुतौ	पर्षते गर्दभ	
पर्ष	१	गतौ	पर्षति	
पर्ष	१	पूरणे	पर्षति	
पर्ष	१	स्नेहने	पर्षते पुत्रे पिता पर्षत्-स	ज
पर्ष	१	गतौ	स्पर्षते	
पर्ष	१	गतौ	पलति ( वा ) पलति	ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुप्रास
पठ	१०	रक्षणे	पाठयति ( वा ) पठयति	क
पठ्युल	१०	स्निपूत्यो	पुठयति	क त
पठ्युल	९	वाधे-प्रयेष	ते ( वा ) पशने	न
पश	१०	बन्धे	पाशयति पाशेन पशुं गो-	क
पश	१०	बन्धवाधयोः-	प पाशः	क त
पप	१	स्पर्शगत्योश्च	शयति	क त
पप	१	वाधनस्पर्शयो	पयति ( वा ) पयते	न
पप	१०	बन्धे-स्पर्शने प्रये	पयति	क
पप	१०	बन्धे-अनुपसर्गात्	यति	क त
पप	१०	बन्धवाधयो.	ति ( वा ) पसते-	न
पम	१	स्पर्शगत्योश्च	यति	क
पम	१०	वधप्रमंथयो.	सयति	क इ
पस	१०	बन्धे	पिबति	क
पा	१०	नाशने	त पुत्रं पिता	क
पा	१	पाने	यति राजसूयं	क
पा	२	रक्षणे	पितरः पारणापारं	क
पार	१०	ममासी		

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
पुट	१	उपसर्ग	पुटति	श
पुट	१	मर्द-मण्डनेच	पुटति	इ
पुग	९	गुप्त कर्मणि	पुगति स्त्रानेन जन. पुण्य पया-पयं निपुण. गा-गं	श
पुष	१०	पशार्थे, प्लवित्	पुषति	क
पुष	६	हिमाया	पुषति गिपुं वानपशु.	य
पुष	७	हिमाया मल्लंगेच	पुषति	इ
पुट	९	अप्रगमने	पुटति कौशलेन भीष्म. पुटति	श
पुट	१	पुटणे	पुटति मनेन कर्मदा	
पुछ	९	महत्वे	पुछति	श
पुछ	१	महत्वे	पुछति	न
पुछ	१०	मराति उत्तिष्ठति	पुछति तुल्यं कृपाणः	क
पुछ	१	पुछे	पुछति देहं	
पुछ	१	पुछे	पुछति	य क प्री
पुछ	१०	पुछे	पुछति देहं मने.	ग
पुछ	१०	पुछे	पुछति कर्म कृपाणः	क
पुछ	१	पुछे	पुछति कर्मिणा प्रान	य
पुछ	१	पुछे	पुछति	
पुछ	१	पुछे	पुछति	य १६

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	मनुयन्ध.
पुस	१०	मर्दे—अभिर्वर्द्धनेच	पुसयति	क
पुस्त	१०	आदरानादरयोः	पुस्तयति धनं	क
पृ	९	पन्ने (त०) पवने	पुनानि ( वा ) पुर्नति विश्वं गंगा।	ग भ गि
पु	१	पवने	पवने गंगा	ह
पू	४	पवने	पूयते	य ह
पूय	१०	मघाने	पूययति	क
पूज	१०	पुनाया	पूजयति गुरुं शिष्यः पूजा	क
पूण	१०	मघाते	पूणयति	क
पूय	१	विशारेण दुर्मधेच	पूयते मृतक.	ई ह
पूर	४	आप्यायने	पूरयेने जलेन तरु.	य ई ह
पूर	१०	आप्यायने	पूरयति धनैर्याचक कर्ण	क
पूर्व	१०	निकेतने	पूर्वयति	क
पूर्व	१०	निकेतनं	पूर्वयतिगृही	क
पूल	१	सधाने	पूलति तुणानि	
पूष	१	वृद्धौ	प्रतिपन्नं पूषति यस्य विक्रम	
पृज	२	वर्णे	पृज्जे	ह ह ल
पृ	९	धीनौ	पृणोति माधुरनिधीन्	न

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण.	मनुष्य ध
ट	६	व्यायामे	धमे व्याप्रियते साधु व्यापारः	श क
ट	१०	पूरणे ( त० ) पा- येन	पारयति पयसा कलशं	क
ट	३	पाटनपूरणयो	पिपत्तिं पुष्टं घनेन पिना	ति
ट	१०	मयमने ( त० ) म- यं	पर्यति ( वा ) पनेयति	दि
ट	२	मयं	मयूके मायुभि मायु	म इ क
ट	३	मयं	मयूकिक न केनापि गति	भ इ
ट	२	मयं	पुंके	म इ
ट	१	मयं	प्रयने	म इ
ट	६	मयं	पूडति घमो लोह	श
ट	६	प्रोगने	पूणति हति भाग्या पू	श
ट	१०	प्रोगने	पूयति	क
ट	१	मयं	पयति	उ
ट	६	पाटनपूरणयोः	पूणति विध मयेन शक	म ति ति
ट	२	पाटनपूरणयोः	पिपति	ति
ट	१०	पूणे	पयति	क
ट	१	पयमगानिष्ठेनेपु	पेयति	म
ट	१	पयं	पेयति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	मेवने	मेवने	म ड
पेम	१	मेमने	मेमनि	म
पे	१	शोधणे	गायनि हिमेन वृत्त	
प्ये	१	वृद्धो	प्यायने	ड
प्याय	१	वृद्धो	प्यायने	इ औ ड
प्युप	४	भागे-दाहे	प्युपयनि	य इ
प्युप	१०	उत्तमेन	प्युपयनि	क
प्रच्छ	६	मिज्ञामाया	तृच्छति गुरुं शिष्यः	श औ
प्रय	१	प्रप्ययने	प्रगने निरुता कवि प्रपा	म प ड
प्रय	१०	प्रतपणे (त०)	प्रापयनि	क
प्रम	१	विम्यागे, प्रसधु	प्रमने परगुणं साधुः	ड
प्रा	२	गुणे	प्राणि जनेन घटं	ल
प्री	९	तपणे-कान्ताय	प्रीणाति (वा) प्रीणाति विनर पुत्र. प्रीतः ता. न प्रीतिः	ग ड
प्री	४	प्रीतो	प्रीयने धर्ममाधु. प्रीतः ता, तं, प्रीतिः	य ड
प्री	१०	तपणे	प्रापयनि (वा) प्रापय- ने देवतां हविषा यज्ज प्रीणयनि	क न



धातु.	गण.	मर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
प्री	१	तर्पणे	प्रयति ( वा ) प्रयते	प्र
मु	१	गतौ	प्रवने	ह
मुप	१	दाहे	प्रोपति	उ
मुप	९	स्नेहनमोचनपूरणे- दाहेच	मुष्णाति पृत्रं पिना-विमु पविमुप्	ग
प्रोप	१	पर्याप्तौ	प्रोपति ( वा ) प्रोपते- नार्मुनाय-कर्णः	प्र ह
ह्रस्	१	मक्षणे	ह्रसति ( वा ) ह्रसते ह्रसः	■
ह्रव	१	गतौ	ह्रवते	ह
ह्री	९	गतौ	ह्रीनाति	ग
ह्रिह	१	गतौ	ह्रिहते	ह
ह्रु	१	गतौ	ह्रवते	ह
ह्रुप	१	दाहे	ह्रोपति	उ
ह्रुप	४	दाहे	ह्रुच्यति गात्रं ज्वरेण ह्रुष्टः, टा, टं, ह्रोप.	य ल
ह्रुप	९	स्नेहनमोचनपूरणे- पु दाहेच	ह्रुष्णाति	ग
ह्रुम	४	दाहविभागयो-	ह्रुस्यति	य र
ह्रव	१	मेवने	ह्रवने	क्र ह
प्ता	२	मक्षणे	प्ताति	ल

धातु.	राज.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
फळ	१	नोपेगना	मलः	ण
फण	१	नि म्नेहे	ति	
फण	१	गनो	ने ( वा ) कणयति	मिण
			मर्षं वय. फाणय-	
फरे	१	पुरणे	ने दुग्धं	
			वति तमसा निशा	
फल	१०	मंग.ने	ड	क
फल	१	गनो मगनेन	लयति	म
फल	१	निप्यत्तो	ति	
फल	१	विशरणे	ति धर्म	काल नि भा
फल	१	विकसने	ति	
फल	१	गती	लुति बलिवा	
फल	१	नीवने	कलति केन	प्र
वक	१	गती	ति	म
वक	१	नैटिल्ये	वकते	इ इ
वक	१०	मार्गेणमंकारे	चित्तं बलं वक	इ इ
वट	१०	वटने	राजयति योद्धा	क
वट	१०	पेल्ये	मानिनः	
वण	१	शब्दे	टयति धनं घाता	क
			नटति	
			ने	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्ण.
बद्ध	१	संयोज्ये	बद्धति	
बध्	१	बन्धने, निद्रायां च	बध्ति बन्धने च	ह
बध	१०	संयमने	बध्ति संयमने	क
बन्ध	८	याचने	बन्धति याचने	द उ ह
बन्ध	९	बन्धने	बन्धति बन्धने	ग औ
बन्ध	१०	बन्धने	बन्धति बन्धने	क
बभ्र	१	गतौ	बभ्रति	
बभ्व	१	गत्यां	बभ्वति	
बब्व	१	गत्यां	बब्वति	
बर्ह	१	बधौ दीप्तौ च	बर्हति	
बर्ह	१	स्मृतिहिंसा दान- वाधु	बर्हति	इ
बर्ह	१	श्रेष्ठे	बर्हति	ह
बल	१	दानवधनिरूपेण	बलति	ह
बल	१	धान्यावरोधे जी- वने च	बलति	न
बल	१०	भृतौ-प्राणनेन	बलति	क
बल	१०	निरूपणे	बलति	क इ
बल्ह	१	श्रेष्ठे	बल्हति	ह

घान्.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुषङ्ग
बह	१	मृतिहिंसा दान-बहने		४
बल्ह	१०	राशु		क.
बल्ल	१०	विषि(न०)भाषार्थे	बल्हयति	क.
	१०	अनादृत्यादृत्योः	बल्लयति	मान
बह	१	अर्धनेत्र	बहने	ह १
बाध	१	पुच्छे	बाधने	पु ४
बिद	१	विशोदने	बिदति	१
बिज	१-१०	अवयवे	बिजति ( वा ) बिजयति	ना क.
बिम	४	भेदने शेषने	बिमयति	य ११
बीज	१	संज्ञे	बीजने	ह
बुज	१-१०	गती	बुजति ( वा ) बुजयति	नि
		भरणे	भा बुज	क.
बुज	१०	न्यसने	बुजयति	नि
बुट	१-१०	हिंसे	बोटति ( वा ) बोटयति	ना नि
मुट	१	संवरणे ( न० )	मुटति	
		उत्तमर्गे	नादति ( न० ) बेदने	११ ४ म
मुद	१	निशामने	बोधति ( वा ) बोधने शास्त्रे	११ म म
मुध	१	बोधने	बोधति शास्त्रं शास्त्रं	११ म म
मुध	१	अबोधने	बोध-	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
बुध	४	अवगमने बुध-	बुध्यते ( अगवा ) बु-	य औ
		क्षायांच	ध्यति	
बुद्	१	निशामने	बुंदति ( वा ) बुंदते	इर उ न
बुध	१	निशामने	बुन्धति ( वा ) बुन्धते	इर उ न
बुन्ध	१०	बन्धे	बुन्धयति	क
बुल	१०	मज्जने	बोलयति	क
बृह	१	उद्यमे	बृहति वैश्यः बृहती बर्हिः	श उ
बृ	—	—	( इति बृ )	—
ब्रुस	४	हानी	ब्रुस्यति	य इर
मण	१	शब्दे	म्रणति	—
ब्रू	१	व्यक्तायां वाणि	म्रवीति ( वा ) म्रूते	स म
ब्रूस	१०	हिंसायां	ब्रूसयति व्याघ्रश्चौरं	क
भक्ष	१	भक्षणे	भक्षति ( वा ) भक्षते	न
भक्ष	१०	अदने	भक्षयति	क
भज	१	सेवायां	भजति ( वा ) भजते वि-	न औ
			ष्णुबुधः भागः, भक्ति	
भज	१०	विश्राणने पाकेच	भानयति मंत्रिणे राज्यं	क
			राना	
भज	१०	भाषणे—भाति	भंजयति	क इ
भज	७	आमर्द्धने	मनवितपादपं दन्ती भंगः	घ ओ औ
भट	१	परिभाषणे	भटति	म

धातु.	शत.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्ध.
भट	१	भूना	भटनि भूतं	भा
भट	१०	प्रतारणे	भटयति धान भटक	क इ
भट	१	परिहासे	भटते	इ क
भट	१०	शिवे	भटयति	क इ
भण	१	सज्जे	भगति	जा
भट	१	पुष्प्रीत्यो नुभे क- स्याण मृगेष	भटने	इ इ
भट	१०	नुभे	भटयति	क इ
भर्ष	१	हिसाया	भर्षति	
भर्ष	१	हिसाया	भर्षति	
भर्ष	१०	नर्जेने	भर्षयते	क इ
भल	१०	निरूपे-आभटनेष	भलयते	क इ
भल	१	परिभाषणे-हिमा- या-दानेष	भलते	भा
भल	१	परिभाषणे-हिमा- या-दानेष	भलते	भल
भष	१	भर्षने	भषति आ भषक	
भम	१	भर्षनदीप्पयो	भमस्ति दुर्मल दुष्ट	लि र
भा	१	दीप्तो	भानि मृग्ये	ल प
भाज	१०	पुष्यङ्कर्मणि	भाजयति घन भ्राना वि- भागः	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.	
भाम	१	कोषे	भामने मूर्धः	भाभिनी	ह
भाम	१०	कोषे	भाषयति		क क न
भाप	१	व्यक्तायांवाचि	भापने	भापा	कृ ह
भाम	१	दीप्तौ	भामने विद्यया विप्रः		कृ ह
भिक्ष	१	यात्रायां	भिक्षनेऽन्नं भिक्षुः भिक्षा		ह
भिद	७	विदाग्ने	भिनात्ति ( वा ) भिन्ने द-	भम इ	ओ
भिद	१०	भेदने	भिमाटं कृष्णः, भेदः		
भिपत्	११	विक्रिमायां	भेदयति		क
भिपत्	११	उपमेवायां	भिपयति भिपक		ह
भी	३	भय	भिमेति पापान्	भय	ति
भीम	१	गती-शब्देन	भीमति		कृ
भुज	१	क्रीडित्वे	भुजति भुजं		ह ओ ओ
भुज	७	पाटनाभ्यवशाभ्यो	भुजाति भक्तं हस्तिः भुक्तिः		प न ती
भुज	७	पाटनाभ्यवशाभ्यो	भुजति कृष्णः भोग		
भुज	१	भरणे	भुजने कषटं		ह
भुज	१	मत्तया	भाम भिवा भानि		ह
भुज	१-२	प्राप्तौ	भुजने ( वा ) भाषयते	कि	ह
भुज	१-२	प्राप्तौ	भोक्षं हानी		

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्त्य
भू.	१०	अवकन्तने दुःखिनि	भावयति वेदार्थं वेदिक	क
भूय	१-१०	अभ्यर्चयौ	भावना	
भू		अभ्यर्चयौ	भूयति ( वा ) भूययति	कि
भृ	१	भरणे	भूयण	
भृ			भरति ( वा ) भरने भि	क ट ड
भृ	१	धारणपोषणयो	सुहर	
भृ			विभृते धरा वायुकि	नि कृ दु ज
भृ			( ल० ) विभर्ते	
भृ	१	भर्त्तने	भर्त्तने	क ई
भृ	१	निमज्जने	भृशति गंगायां गानिक	क
भृ	१०	शर्म	भृशति ( वा ) भृशयति	इ वि
भृ	४	भय पतने	भृशति	य ई उ
भृ	८	भामने भूना भृजि	भृणाति कृपुय विना	य मि
भृ	१	भये	भेषति ( वा ) भेषने वा	क म
भृ			दारमाधु	
भृ	१	भये	भ्यमने	क
भृ	१	भदने	भृशति	
भृ	१	दादने	भृगति	
भृ	१	बभूने	भृमति तौषे दृतिः	न न उ
भृ	४	भनवस्थाने	भृम्यति कृष्य भय	य भ ज
भृ			भृन्नः सा-मं भृन्ने	न उ



धातु.	सं.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्त.
अंग	१	अवयंसने	अंगने अष्ट-ष्टा-ष्ट	उ र ल
अंश	४	अवयवने	अंशानि वृत्तान्तं वयं	उ रू उ
अम्ब	६	राके	मृज्जि (वा) मृज्जि	श म औ
			मृज्जि	
अंम	१	अवयंसने	अंमने	र
आन	१	दीप्तौ	आनने	र
आन	१	दीप्ता	आनने	आनपु ड ण ऋ ए
आश	१	दीप्तौ	आशने	ऋ ण डु ड
आम	—	—	( इतिप्रःश )	
ओ	९	मरणे ( त. ) मये	आगानि नागं भर्ता	ग नि
भुद	६	मंजुनिमंहायोः	भुदनि	श नि
भुग इ.	१०	आशयां ( त. )	भुगयने पुत्रं वंध्या	क इ
नि भुग		विशंकायां		
भ्रेज	१	दीप्ता	भ्रेजने	ऋ इ
भ्रेष	१	चष्टे मये	भ्रेषानि ( वा ) भ्रेषने	ऋ अ
भृश	१	अदने	भृशानि	
भृदा	१	दीप्ता	भृदाने	ऋ ण डु ड
भृस्त	—	—	( इतिभृश )	
भ्रेष	१	गती	भ्रेषानि	ऋ
मक	१	मंडने	मकने मनं कुंकुमेन	र इ
मक	१	गती	मकने	र इ

धातु.	शत.	अर्थ.	उदाहरण.	भानुसन्ध.
मञ्ज	१	गती	मञ्जते	ठ
मभ	१	मथाने	मथति मन्तेनास मथिहा	
मग	१	गती	मगति	
मग	१	गती	मगति	इ
मग	१	मर्पणे, गती	मगति	इ
मगध	११	परिवेष्टने नीचदा	मगधति नीच	ट
		मये		
मप	१	भुषे	मपति	इ
मर	१	कृतने गती भा-	मरति कितयो द्युने	इ इ
		मये		
मव	१	कलकने	मवति मूर्त	इ
मव	१	धारणे उच्छ्वासधृ-	मवति मास्य कठे मभः	इ इ
		त्यर्थाभासु		
मज्ज	१	गत्यां	मज्जति	
मज्ज	१०	गृहाध्वनयोः	मज्जति	
मठ	१	निशामे, मंद	मठति मठ	
मठ	१	दोके	मंठने	इ इ
मह	१०	मुने	मंठयति ( वा ) मंठति	कि ग इ
			मंठति	
मह	१	नेष्टने ( त० ) वि-	मंठने	इ इ
		भागे		

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्त.
मह	१	पूजाया	महति	
मह	१०	त्विषि	महयनि	क
मह	१	पृच्छा	महंत	इ
मह	१०	पूजाया	महयनि	क
मा	२	माने	मानि दंडेन मुनि— दमाणं	क
मा	३	माने शब्दे च	यमं मिथ्याने मुनिः	छि
मा	४	माने	मायने	य
माक्ष	१	काक्षाया	माक्षति	इ
माड	१	माने	माडनि ( वा ) माडने- स्वर्णे—माडः	क
माघ	१	कृषे	नाथंत	इ
मान	१	पूजायां जिज्ञासा- यां च	मीमांसेन शान्तिं युयः— मीमामा	
मान	१०	पूजाया	मानयति	क
मान	१	पूजाया	माननि	
मार्ग	१०	संस्कारसर्पयोः	मार्गयति	क
मार्ग	१-१०	अन्वेषणे	मार्गनि ( वा ) मार्गयति	कि
माज्जे	१०	शब्दे ( तथा ) पूजाया	माज्जेयति—माज्जेतोरः	क
माह	१	माने	माहति ( वा ) माहते	क उज

धातु.	वर्ण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुपम
मि	९	मतेषणे	मिनुनि ( वा ) मिनुतेषुणं	न अ इ
मिउ	६	वाचं. उग्रेतेषु	वायु	
मित	१०	दीप्ता	मिच्छति	श
मिथ	१	मते. मेषायां थ	मिमानि ( वा ) मिमयति	इ कि
मिद	१०	खेदने	मिथति	प्र न
मिद	१	गर्भे	मिदति ( वा ) मिदयति.	इ हि
मिद	४	खेदने	मिदति मेदति	
मिद	१	खेदने	मिदति, मेद. मेद. मेदम	य लृ
मिद	१०	खेदने	मिदति पृथे विना	आ नि क
मिद	१	मेषादिमयो	मिदयति	क
मिथ	१	मेषादिमयोः	मिदने ( वा ) मिदति देद	प्र न
मिथ	१०	मेषके.	मिथति ( वा ) मिथने	अ अ
मिथ	६	मेषणं	मिथयति घृतेनाशं मन	क त
मिथ	१	मेषके	मिथति ( वा ) मिथने	श अ
मिश	१	राज्ये	माधु माधु मेधकः	
मिथ	१	मेषने	मिथति	इ
मिथ	६	मेषायां	मिथति	
			मिथति	
			मिथति कृष्णे शिवापाद	उ श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मिह	१	मेचने	मेहनि मेहः—प्रमेह-	आ
मी	१-१०	गता मत्या च	मेहन	
मी	४	हिमायां	मयनि ( वा ) माययनि	कि
मी	९	हिमायां	मीयने मान	य ड ट
मीम	१	गतां	मीनानि ( व ) मीनीने रिपुं	ग ज
मील	१	निमेषणे	मीमनि	झ
मीव	१	म्यौब्ये	निमीलनि मिया नेत्रे	ञ
मुच	१०	प्रमोचने मोदने च	मीनानि	
मुच	६	मोचने	मोचयति कंचुकं तपेः	क
मुच	१	कलकने	मुञ्चानि (वा) त्वामुचने देहं	रापञलभ
मुच	१	कलकने	निरक्तः	
मुच	१	कलकने	मोचने	ड
मुच	१	गत्यां	मुञ्चते	इ उ
मुज	१०	मृगाध्यनयोः	मुचनि	
मुज	१	राब्दे-मृगा	मोजयति	क
मुट	१	मर्दने	मुंजति मुंजः	क इ
मुट	१	मर्दने	मुंजति	
मुट	६	आक्षेपप्रमर्दनयोः	मुटति काष्ठीयस्य दण्डं	इ शि
			कृष्णः	

अक्षर.	सं.स.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुपाद.
मृ	१-१०	मृद्वंशे	मोदयति ( म ) मोदयति शाना शिष्टया	क्रि
मृ	१	मृद्वंशे	मृद्वंशे	इ इ
मृ	१	मृद्वंशे	मृद्वंशे मृद्वंशे नापि	इ इ
मृ	१	मृद्वंशे	मृद्वंशे मृद्वंशे	इ इ
मृ	१	मृद्वंशे	मृद्वंशे	इ इ
मृ	१०	मृद्वंशे	मोदयति	क
मृ	६	मृद्वंशे	मृद्वंशे नियम मृद्वंशे	श
मृ	१	मृद्वंशे	मृद्वंशे	इ
मृ	१	मृद्वंशे	मोदयति यशसा कवि - आमोद	नि इ
मृ	१०	मृद्वंशे	मोदयति मृद्वंशे धान्यं नारी, मोदकः	फ
मृ	६	मृद्वंशे	मृद्वंशे कंटकेन वार्धे कृ यक मृ. मृ	श
मृ	१	मोदयति मृद्वंशे	मृद्वंशे मृद्वंशे सद्यं रा- मृद्वंशे	आ
मृ	१	मृद्वंशे	मृद्वंशे	इ
मृ	१	मृद्वंशे	मोदयति	
मृ	४	मृद्वंशे-मृद्वंशे	मृद्वंशे	य इ
मृ	९	मृद्वंशे	मृद्वंशे धनं चोरः	ग



पाठ.	राज.	अर्थ.	उदाहरण.	यानुसंध.
मृद	९	मे	मृत्तानि मित्रा क्रुकाः	ग
मृग	९	हेमाश	मृणानि रिषु मृणात्	दा
मृद	९	मेद	मृद्वानि अग्निर्मी गतः विमर्द	ग
मृष	१	उद	मर्दने ( वा ) मर्दनि मृष	
मृश	१	आमर्शने	मृत्तानि गुरुवचनं साधु- तरामर्शः	दा आ
मृष	१	मे	मर्षनि	उ
मृष	१	हने	मर्षने दोषं हरिः	ह
मृष	१-१०	तिनिशार्श	मर्षने ( वा ) मर्षयने	रि क
मृष	४	मार्श	मृत्पानि ( वा ) मृत्पाने	य ज
मृष	१०	तार्श, सहने च	मर्षयति	क त
मृ	९	मे	मृणानि	ग मि
मृ	१	मिदति	मृगते-तिनेषान्वि-विनि- मय नैमेष- विमया मे- मय. विमयः	ह
मेद	१	दि	मेदनि धनेन नीचः	
मेद	१	न्नादि	मिदति	क्र
मेय	१	मे मेधायाम्बे च	मेधयति	धा ज
मेद	१	धारिप्रयोः	मेदनि ( वा ) मेदते मेद	धा घ



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्त्य
मेघ	१	मगमे वधे	मेघानि ( वा ) मेघने स- ग्यामग्यायं मेघा, मेघः	रु म
मेघा	११	आशुग्रहणे	मेघायानि	ट
मेघ	१	गत्यां	मेघने	ट फ
मेघ	१	मेघने	मेघने	फ
मोक्ष	१ २	अयने	मोक्षानि ( वा ) मोक्ष यानि शरशूरा	कि
शा	१	अभ्यासे	मननि वेद निगु आ- शाय	
अक्ष	१	नंयते	अक्षनिजं नयते	
अक्ष	१०	अक्षणे स्तेउने च	अक्षयनिरनयादेहेकृष्ण	क
अक्ष	१	अक्षे	अक्षनि	
अक्ष	१	उन्मादे	अक्षनि	क
अक्ष	१	अक्षे-शोदे च	अक्षे अक्ष अक्षे	ह
अक्ष	१	अक्षे	अक्षनि	ह उ
अक्ष	१	अक्षे	अक्षनि	
अक्ष	१	अक्षे	अक्षनि	क
अक्ष	१	अक्षे	अक्षनि	
अक्ष	१	अक्षे	अक्षनि	ह उ
अक्ष	१-१०	अक्षे-शोदे च	अक्षनि ( वा ) अक्षयनि	ह
अक्ष		अक्षे-शोदे च	अक्षनि	

धातु.	राज.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मुट	१	उन्मादे	मुटति घनेन नीपः	फ
मुट	१	उन्मादे	मुटति	फ
मुट	१	मेवने	मुटति	फ
मुट	१	कान्तिमंशये	मुटयति, उपमुटयति, प्रमुटयति	फ
मुट	१	मात्राविनामे	मुटयति पुष्पशानेन मूनि-	फ
यश	१०	पुमाया	यशयते	फ
यज	१	देवपुत्रासमातिहर	यजति हरि-यजतिपाप	फ
		णरानपु	मं साधु यजुना शिख	फ
यज	१	प्रयाने	यजते	फ
यज	१०	निकारोपकारयो	यजयति शत्रुं वरी-याज	फ
यज	१	मेधुने	यजति	फ
यज	१	मेधुने	यजति	फ
यज	१	उपमे	यजतिपापमाधु	फ
यज	१	हरिवेपणेष्टने	यजयति विद्यामाधु - यजयति विद्यामाधु - यजयति विद्यामाधु - यजयति विद्यामाधु -	फ
यज	१०	मंशयेने	यजयति यज्ञेन यज्ञं य	फ
			जा-यज्ञं	फ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	शतुदन्ध
यस	४	प्रयत्ने	यस्यति घनाय नरः-प्र- यासः	य उ ई
या	२	प्रपणे, गर्वाच्च	याति	ल
याच	१	याज्ञायां	याचति ( या ) याचते घने यागकः	ल दु ढ प्र
यु	२	मिश्रणामिश्रणयोः	यौति घृतेनाक्षं यौति त- रेभ्यः साधुः-यवः पाय.	ल
यु	९	बंधे	युनानि ( या ) युनीने	ग क
यु	१०	गुगुप्सायां	गाययने गृद्धं युयतिः-	क क
युग	१	यज्जने	यौनि	
युछ	१	प्रसादे	युंगनि	१
युन	१-१०	संगमने	युछनि	
युन	७	योगे	यौमनि ( या ) यौमग ति ह्ये वृत्तं गोत्र.	कि
युन	४	समाधौ	युनक्ति ( या ) युक्ते गो	य म इ ई औ
युन	१०	निन्दे	ययोगी योगः	
युन	१	भागने	युज्यते गुहायां योगी	ग क औ
युव	४	संग्रहादे	योजयते	क क
युव	४	व्याकृत्यने	योजने	क क
			यु-यन गोत्र. — गृद्धं	ग क औ
			युज्यति	ग इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	भानुसंघ.
गृह्ण	१	हिमाया	गृह्णयने	क ह
ग्रेष	१	मयत्ने	ग्रिषेने	प्र ह
ग्राट्, ग्रां.	१	मंक्ष्ये	ग्रोटीनि ( वा ) ग्रौटीनि	प्र
ट, ग्रां ड			रामणी कृष्ण.	
रक्त	१०	आम्नादने ( त था ) आपने	राक्यानि मोदक बाढ	क
रक्ष	१	याने	रक्षति, रक्षा	प्रि
रग्न	१	गत्या	रग्नति	
रग्न	१	गत्या	रग्नति	इ
राग्न	१	गोपणाश्मर्थयो	राग्नति हिमेन वृक्षः	प्र
रग	१०	स्वादे भासा व	रगयति	क
रग	१	जाकाया	रगति मावु — ग्रेडेभ्य	म ए
रग	१	गनां	रगति	इ
रघ	१०	भाभि	रघयति	क इ
रघ	१	गनां	रघने रघु	क इ
रघ	१०	आम्नादने	राघयतिमेक्षंकरेणकुपार	क
रघ	१०	प्रतिगन्ने, कृत्या	रघयति	क त
रज	१	रागे	रजति ( वा ) रजतेयु- वायुवर्ना ( यथा ) रज- कः-रागः-रक्तः-जाने	म भो प्र

धातु.	गण	अर्थ	उदाहरण.	भनयन्त्य
गश	४	गच्छे	गच्छन् पत्नी	य क क
राम	१	गच्छे	रामन्	क इ
रि	१	हिंसाया	रिणांनि मलिमयः पापं	न
रि	६	गती	गियन्ति	श
रिग	१	गती	रिगन्ति रिगणं	इ
रिच	१-१०	वियोजनमपचन- यो.	रिचति ( वा ) र्चयन्ति राज्यं गिपोः रचयन्ति ह- रिनय्यारोगी	कि
रिच	७	विरेचने	रिचति ( वा ) रिक्ते- गेमो-विरेकः	चनइ औ
रिज	१	रुज्यर्थे	रिजते	उ
रिफ	६	कृत्यनयश्चनिदा- हिमादनेषु	रिफति रिपुंशरः-रेकः- फा-फ	श
रिम्फ	६	तथे	रिम्फति	श ५
रिष	१	व्रजे	रिषति	इ
रिश	६	हिंसाया	रिशति	श औ
रिष	१	हिंसायां	रिषति	
रिष	९	विप्रयोगे	रिष्णाति संन्यासी संवे- धिभ्यः-	ष
रिह	६	कृत्यनयश्चनिदा- हिमादनेषु	रिहति दुर्जनः साधुं	श

पानु.	सं.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुपाद.
री	४	ग्रवणे	गोपने जगं घटन्	ग ट औ
री	६	रेपणे वधे गनी च	गोणाति	ग मि
री	९	ममनेने	मेति नागी	त
रु	२	राट्टे	रैति	ल टु
रु	१	गोपे, वधे, गत्या च	रक्तेन वांगवगमा—रवः रविः रक्षायतिदुष्टः रक्षा.—क्षा-	र
रुस (वा)	१०	राकण्ये	रक्ष	क त
रुस	१	रुनी प्रातिप्रज्ञा	रिषने मोरोचना	रु रु
रुस	६	रागे, भगे, भंगे च	रजनि रंगेन हस्तः	रा भो भो
रुस	१०	रिमे	राजयति	फ
रुट	१	प्रतिपाने (त)	राटने	ल रु
रुट	१०	रुति रागी च	राटयति	क
रुट, रुटच	१	रुने	रुटति धने	र
रुट	१	उपपाने	रोटति वविधमे	प्रा रु
रुट	१	प्रतिपाने	रोटने	र
रुठ	१	गत्यान्स्यान्त्य-	रुटति	र
रुठ	२	मोटे	रोदीति	रोदन स व रु

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवचन
लघ	१	शोषणे-गर्ता	लंघयति मयादां लंघयति	इ
लघ	१०	भाषार्थे-स्वपि	पापी लंघयति	क इ
लङ	१	लक्षणे	लङ्घयति चक्रेण गृहं	क
लज	१०	अग्नौ	लजयति	क
लज	१०	भानिकेन नहि माव-	लजयति	क इ
लज	१०	प्रकाशने	लजयति विद्यां विप्रः	क न
लज	१	भस्मने	लजयति	इ
लज	१	भस्मने	लजयति	इ
लज	६	मीडे	लजयति ( व ) लजने	श ज इ भे
लंज	१०	भासने	लंजयति	क त
लट	१	वाक्ये वाक्योक्तौ	लटति स्वार्थे लोट्	क त
लट	१	विद्यास	लटति	क
लट	१	गिहोन्मथने	लटयति रसनां परद्रव्ये	म
लट	१०	उपसेवाय	लटयति शिशुं माता	क
लट	१०	वाष्पायां	लटयते	क इ
लट	१-१०	भाषणे भासनेच	लंघयति ( वा ) लंघयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लड	१-१०	उत्क्षेपे	लडति ( वा ) लेंडयति.	कि इ ओ
लड	१०	आक्षेपे	लडयति	क त
लप	१	व्यक्तायावाचि	लपति विद्याय प्रत्याप आद्याय अनुद्याय वि प्रत्यापः सत्याय मुप्रत्याप अरत्याप	क
लभ	१	अवश्यमेव अवलम्ब ने शब्देषु	लभने दाम्नाया	इ इ
लभ	१	शब्दे	लभने	ई इ
लभ	१	प्राप्ति	लभने भिक्षां लाभ मु- लभ भा भ लभति पुन लाभान	रु प दु ओ
लग	१	गमौ	लगने	इ
लव	१	गमौ	लवति शक्तेन मोकु- लात् मधुगानेह	
लल	१०	दंष्ट्राया	लल्यते मुन बाला	क इ
लश	१०		( इतिङ्ग )	
लप	१	हान्तौ	लपति ( वा ) लपने धर्म साधु	न
लप	४	हान्तौ	लप्यति ( वा ) लप्यने	य न
लप	१०		( इतिङ्ग )	



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध
लभ	१	लभ्यमानविद्यमानयोः	लभ्यमानि विद्यमानि विद्यमान	
लस	१०	शिल्पयोगे	लसयति नद्यो बान्तां	क
लदन	६	धीडे	लज्जने वधुः लज्जा लज्जि न—ना—त	श ड इ
ला	२	दाने आदानेच	लाति	ल
लास	१	लोपणालम्भयोः	लास्यति हिमेन वृक्षः	लृ
लाघ	१	मामर्थ्ये	लाघने	लृ इ
लाछ	१	लक्षणे	लाछति	इ
लान	१	भर्त्सने भर्गेच	लानने	इ इ
लान	१	भर्त्सने भर्गेच	लानति	
लाट	११	मीत्रे	लाट्यति मीवन्तानमंधमा	ट
लाह	१०	आक्षेपे	लाहयति	क त
लाभ	१०	प्रेरणे	लाभयति लाभाय मूने विद्य लाभ	क त
लिख	१	गता	लिखति	
लिख	६	लेखने	लिखति लेखको ग्रंथं ले- खनं लिखनं लेखा लिखनी	श
लिग	१	गता	लिगति	इ
लिग	१	चित्राकरणे	लिगयति पटं रंगकारः	क इ
लिट	११	अस्त्रमुत्पन्नयोः	लिट्यति पितरिपुत्रः	ड

क्र.	पान.	वर्ग.	उदाहरण.	यन्त्रवर्ण.
१	१	उपदेश	विपत्ति ( वा ) विपत्ति देह चरमेन अन	वा च विपत्ति
२	२	गती	विपत्ति	वा च विपत्ति
३	३	मर्यादा	विपत्ति देह चरमेन, अन	वा च विपत्ति
४	४	आश्वासन	वा, विपत्ति, रा द	वा च विपत्ति
५	५	द्वितीय	विपत्ति न, लीदे मृद	वा च विपत्ति
६	६	विपत्ति	वा	वा च विपत्ति
७	७	विपत्ति	विपत्ति ( वा ) विपत्ति	वा च विपत्ति
८	८	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
९	९	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
१०	१०	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
११	११	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
१२	१२	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
१३	१३	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
१४	१४	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
१५	१५	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
१६	१६	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
१७	१७	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
१८	१८	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
१९	१९	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति
२०	२०	विपत्ति	विपत्ति विपत्ति	वा च विपत्ति

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
सृज्	१	सृज्ये	सृजति धनं	इ
सृज्	१-१०	सृज्ये (त.) अ- वज्ञापात्र	सृजति (वा) सृजयति	किं
सृज्	१	उपमाने	सृजति कल्पितम्	
सृज्	१	प्रतिमाने	सृजते विरहेण भूमां राम	लृ इ
सृज्	१	सृजे	सृजति	श दि
सृज्	१०	चायं	सृजयति	क
सृज्	१	आलस्ये (त.) गत्यालस्यस्तेयलो- पेभ्य	सृजति	इ
लृड्	१	मन्थने	लृडति	
लृड्	१	संवृत्ती, निरूपे	लृडति	श नि
लृण्ड, लृड्	१०	चायं	लृण्डयति	क
लृय	१	हिमामंक्रेशयोः	लृन्धति रावणं रामः रा- वणशरेण रामो न लृन्धति	इ
लृप	४	व्याकृतत्वे	लृप्यति	य ई र
लृप	१	छेदने	लृपति (वा) लृपते का- ष्ठं वर्धकैः लोपः लृप्- ना तं	श प अ क लृ औ
लृप	१-१०	अर्द्धने-अर्द्धशने	लृपति (वा) लृपयति	किं इ

धातु.	तण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
लुप्त	४	मार्थे	लुप्तानि पुत्रवंध्या लो-	य
लुप्त	१	वेमोहने	प लुप्तं धा चं	श
लुप्त, लुप्त	१०	हिमाया ( न० )	लुप्तानि गुडं मायिक.	क
लुप्त, लुप्त	१	स्नेहे	लोपयति	ह
लुप्त	१	स्नेहे, भुषायाच	लोपने	औ
लुप्त	१	मार्थे	लोहनि	म जि न
लुप्त	९	उद्दने	लुप्तानि ( वा ) लुपति	ट
लुप्त	१	अवनयने	लुपति	ट
लुप्त	११	विलासमन्त्रनेच	लुपयति पूर्त्ता मनसि	ट
लुप्त	११	विलासे मन्त्रनेच	लुपयति द्वितीऽतिभो-	ट
लुप्त	११	धौत्यं-पूर्वभावेन	लोपयति कामुकः प्रिय-	ट
लुप्त	१	नेच—	लोपयति	ह
लुप्त	१	गमने शब्देन	लोपयति	ट
लुप्त	११	दीप्तौ	लोपयति	क ह
लुप्त	१	दर्शने	लोपयति	क ह क
लुप्त	१०	भाषार्थे दीप्तिष	लोपयति	क ह
लुप्त	१	दर्शने	लोपयति	क ह
लुप्त	१०	भाषार्थे द्विषि	लोपयति	क ह
लुप्त	१	उन्मादे	लोपयति	क ह

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	यनुष्य
छोट	११	धार्त्य-पूर्वभावे	छोटानि धूर्तः	ट
छोट	१	मघाने	छोटने धान्यं छोटः	क
छोट	१	उन्मादने	छोटति	क
रूपी	९	खेपणे	रूपीनानि	ग
रूपी	९	गत्यां	रूपीनानि	ग
वक	१	कौटिह्ये	वकं	ग
वक	१	गती	वकने	ड
वक्ष	१	गोरे (त०) सं-	वक्षति शिभु	ड
वक्ष	१	हतो.	वक्षः	
वक्ष	१	गती	वगति	
वक्ष	१	गती	वक्षति	
वग	१	गती-खजेष	वगति	इ
वघ	१	गती-गत्याक्षेपे	वघने	इ
वच	१	वाचि	वचति	इ
वच	२	परिभाषणे	वक्ति	औ
वच	१०	संदेशने	वाचयति पत्रं कृष्णाय	औ
वच	१	एकचर्यायां	रुक्मिणीवाचिकः	क
वच	१	गत्या	वचने	इ
वच	१०	प्रलंभने वचनेच	वचनि	ड
वच	१	गती	वचयते	उ
			वचना	क

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध
घट	१	विभाषणे	घटति	म
घट	१	वेष्टने	घटति घटकने बाटी	
घट	१०	अपे	घटयति मात्स्यं मात्स्यकार वेष्टनं बाटयति	घ त
घट	१०	विभाजनं	घटयति भूमिं ग्रामिक	क ग
घट	१ १०	विभाजने	घटति ( वा ) घटय ति घन	क इ
घट	१०	भाग	घटयति	क त
घट, घट	१	क्रीडये	घटति	
घट	१	एक. वट्याया	घटने	इ उ
घट	१०	विभागे	घटयति	क इ
घट	१	वेष्टनं ( ग. ) वि	घटने घटक. बाटी	इ उ
घण	१	भाग	घणति	कृ
घट	१	शब्द	घटति	ऐ
घट	१	व्यक्तायागानि	घटति संवत्	
घट	१-१०	भाषणे मदेशव-	घटते ( वा ) वादयते	कि उ
घट	१	चने		
घट	१	स्वर्ये	घटति मेरु	
घट	१	अभिवादनस्तुत्यो-	घटने हरि वन्दना	इ उ
घट	१	हिमायां	घटति	
घन	१	हिमायां	घनति	उ

धातु.	संख.	अर्थ	उदाहरण.	अनुवच.
धन	१	संभक्तौ ( न. )	वनति	
वन	१-१०	शब्दे उपकृतौ श्रद्धा रति शब्दे उपधा- नेच	वनति ( वा ) वनयति	कि
वन	१	व्यापृतौ	वनयति-परिउपसर्गे प- रिवानयति	म उ
वन	८	याचने	वनने भिक्षु-	द ह उ
वप	१	बीजतनुमंताने ( तथा ) मुण्डे	वपति बीजं सत्सेत्रे पटं- वपने तन्नुवायः उत्तः ता तं	दृ षे भौ अ
वम	१	उद्भिग्णे	वमाने शोणितं	दृ उ न
वय	१	गते	वयने	ह
वर	१०	रम्पाया	वरयति वरं स्वयंवरं वरा-	क त
वरण	११	गती	वरण्यति	ट
वयं	१	गत्यां	वयंति	
वचं	१	दोषो	वचने	ह
वध	१०	उद्वेगप्रणयो	वधयति	क

ण	धये.	उदाहरण.	अनुयन्ध
१०	वर्णक्रिया विम्नार- गुणवर्णने वचने प्रे रणेच	वर्णयति वर्णः	क त
१०	पूर्तिउद्गोः	वह्ययानि	क
१०	भाषार्थे विविधि	वह्येति ( वा ) वह्ययति	कि
१	भ्रष्टये	वह्येने	क
१०	हिमायां ( न ) दीप्ति	वह्ययति वहं	क
१	गर्ता	वभ्रयति	
१	मवरणे	वल्भे धन	क
१	मवरणे	वल्भे वाति वल्भ	
१	भोगने	वल्भते	क
१०	भाषणे	वल्कयति वल्क वल्क	क
१	ग्रन्थे	वल्कयति	क त
११	भूमाभापुययो.	वल्कयति द्विमेऽतिवै- भोगे	क
१०	दृतिपूयोः	वल्कययति	
१	वि.वि	वल्कयति	क
१	भ्रष्टये	वल्क्ये	क



क्र.सं.	नाम.	वर्ग	उद्देश्य.	मार्ग.
१०१	०	१०१	१०१ १०१ १०१ १०१	१०१
१०२	०	१०२	१०२ १०२ १०२ १०२	१०२
१०३	०	१०३	१०३ १०३ १०३ १०३	१०३
१०४	०	१०४	१०४ १०४ १०४ १०४	१०४
१०५	०	१०५	१०५ १०५ १०५ १०५	१०५
१०६	०	१०६	१०६ १०६ १०६ १०६	१०६
१०७	०	१०७	१०७ १०७ १०७ १०७	१०७
१०८	०	१०८	१०८ १०८ १०८ १०८	१०८
१०९	०	१०९	१०९ १०९ १०९ १०९	१०९
११०	०	११०	११० ११० ११० ११०	११०
१११	०	१११	१११ १११ १११ १११	१११
११२	०	११२	११२ ११२ ११२ ११२	११२
११३	०	११३	११३ ११३ ११३ ११३	११३
११४	०	११४	११४ ११४ ११४ ११४	११४
११५	०	११५	११५ ११५ ११५ ११५	११५
११६	०	११६	११६ ११६ ११६ ११६	११६
११७	०	११७	११७ ११७ ११७ ११७	११७
११८	०	११८	११८ ११८ ११८ ११८	११८
११९	०	११९	११९ ११९ ११९ ११९	११९
१२०	०	१२०	१२० १२० १२० १२०	१२०

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
वा	२	गतिगंधनयो गमनहिमयो	गतिवायु	ल
वात्	१	वात्सायां	वात्सनि	वात्सा
वाञ्	१	इच्छाया	वाञ्जनि	वाञ्ज
वाह	१	आप्लावे प्रीतिं च	वाहने गंगाया मुनि च	वाह
वान	१०	मुक्तमेव नयो गमो	वानयति स्वमनेन वति वतिजना	व
वाध, वाध	१	विरोधने	वाधने मार्गं गन्तुं वाधा	वाध
वाश	४	सोढ	वाशयति	वाश
वाग	१०	उपमेवाया	वागवाच गुरुं धुप	वाग
वाह	१	मयने	वाहने	वाह
विष	७	पृथग्भावे	विनक्ति वा विच्छिन्नं च	विच्छिन्नं
विट	१	गती	विटति	विट
विट	१०	भावाधे, निर्विष	विटयति	विट
विस	१	पृथग्भावे	विनेति देहादगमान वि	विच्छिन्नं
विस	१	अवच्छन्नयोः	उद्भिजेन सज्जामासु, वे	विस
विस	७	अवच्छन्नयोः	विनक्ति छेद	विस

पानु.	सं.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्ण
विट	१	शब्द (न.) आक्रान्ते वेद्यनि		
विट	१०	शित्या	विटयति	क इ
विट, विट	१	आक्रान्ते	वेद्यनि विटान्.	
वित्त	१०	म्यामे	विजयति	वित्त क त
विष	१	गानने	वेगने धानने भिन्	क द
विद	२	ज्ञान	नञि विष्णु वृत्तः वेद	म
विद	७	विचारणे	विन्नेत्रप्रविशति	व इ औ
विद	४	सत्ताया	विद्यते	य इ औ
विद	६	ज्ञान	विदति ( वा ) विदते पु	न, प, म, न, य
			ण्यदाना	
विद	१०	वेदनाभ्यामविवा	वेदयते दृग् भिक्षुः	क क
		मेपृ		
विष	६	विधाने	विषति विश्व वेदाः विधि	श
विष	१०	क्षेप	वेपयति	क
विल	६	भेदने ( न. ) मृत्ना	विलति तरुं हम्नी विलं	
			( इतिविश्वः )	श
विश	६	प्रवेशे	विशति	विशेश श औ
विष	१	मेचने	वेपति	वेप उ
विष	३	व्याप्ती	वेवोष्टि ( वा ) वेविष्टे	लि इर् औ
			विश्वं विष्णुः	न लृ
विष	९	विप्रयोगे	विष्णाति	ग औ

धातु.	तण.	अर्थ.	उदाहरण.	भणुप्रभ.
विष्क	१०	हिमायो	विष्कयति	क
विम	४	रणे	विम्यति विमं विम	य उ
वी	२	कानिगमिन्मसि सपप्रननगादनेपु	वीनि	ल
वीम	१०	व्यमने	वीमयति	क त
वीम	१	व्यमने व्यमनं	वीमं	क ह
वीर	१०	विष्कानि	वीरयति वीरः	क त ह
वुग	१	व्यागे	वुगति वल साधु	इ
वुट, वुट	१-१०	हिमे	वुटति ( वा ) वोटयति	कि
वुम, वुम	४	उत्तमगे	वुमयति कचुक मपे वुमं	य
वृ	९	वरणे	वृणाति ( वा ) वृणते व- रंकन्या	न म
वृ	९	वरणे	वृणति	ग
वृ	९	मंमरणी	वृणाति विष्णु विवेकी	ग ह
वृ	१	आवरणे	वरति ( वा ) वरते	म
वृ	१०	आवरणे	वारयति	क
वृक	१	आद्रोने	वृकते वृक	ह
वृश	१	वरणे संपातेच	वृशते कन्या वरं वृश	ह
वृम	७	वृत्तौ	वृणक्ति	प इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृज्	१-१०	वर्जने	वर्जयेति ( वा ) वर्जयति	कि
वृज्	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल ह इ
वृज्	३	वर्जने ( न )	वृत्तावृणक्ति ज्वलं शिष्टः	घ ई
वृड्	४	गुह्ये	गुह्याति	ग
वृण	५	प्राणने	गृणानि	झ
वृग	६	भक्षे	गृणोति ( वा ) गृणते	द म उ
वृत्	७	वर्तने	वर्तते वात्ता	न उ ऋ ल
वृत्	८	सम्भर्त्ता	वर्णं वृन्यते	य ऋ उ
वृत्	९	भाषायेति विधि	वर्तयति	क उ
वृत्	१०	भाषायेति दीप्ति	वर्द्धयति	क
वृत्	११	वृद्धौ	वर्द्धने घर्षण	ग ऋ ऋ ल
वृत्	१२	सिञ्चने न. १५	वर्षति वृषः	उ
वृत्	१३	वर्त्तयति	वर्त्तयति	क ऋ
वृत्	१४	वर्त्तयति	वर्त्तयति	कि ई
वृत्	१५	वर्त्तयति	वर्त्तयति	इ
वृत्	१६	वर्त्तयति	वर्त्तयति	उ
वृत्	१७	वर्त्तयति	वर्त्तयति	इ
वृत्	१८	वर्त्तयति	वर्त्तयति	इ
वृत्	१९	वर्त्तयति	वर्त्तयति	इ
वृत्	२०	वर्त्तयति	वर्त्तयति	इ

सं.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
१	९	तरणे (अथवा) भरणे	वृणानि (वा) वृणानि	ग ज
१	१	मनु संज्ञाने	वयति (वा) वयते वरु ननु वाय.	ए न
१	१	ज्ञानवित्तानि ज्ञान	वेणानि (वा) वेणते	“ न
१	१	याधने	वेधने वेधिन वेध	न। ६
११	११	वीर्ये, स्वप्ने च	वेद्यनि ज्ञाना विषयेषु	
१	१	गतिज्ञानवित्तानि	वनानि तपस्व्यत्यभ्यासेन	अ
		ज्ञानमनवादिप्रमहण		
		चरनेषु		
१	१	चरने	वेपने वातेन वृक्ष	अ टु र
१०	१०	हालेपदेशे	वेलयनि दिन गणक वेला	व न
१	१	गती	वेद्यनि वेद्या	ऊ
१	१	गती	वेद्यति	
१	१	वाल	वेद्यनि	व
१	१	वातिगतिभ्याप्ति	वेद्यते	गु ह र स
		शेषप्रमनसादनेषु		
१	१	वेद्यने	वेद्यते	व
१	१	गती	वेद्यति	१ १
१	१	प्रयत्ने	वेद्यते	अ व

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
वै	१	शोषणे	त्रायति	औ
व्यच	६	व्याजोकरणे (त.) सम्भवे	व्यचति साधुं धूर्तः	श शि
व्यप	१	दु.स्वपयचलने	व्यपयते पापात्माधुः व्यपा	प म क
व्यव	४	ताडने	विध्यनि व्याधो मृगं	य औ
व्यप	१०	क्षये	व्यपयानि	क
व्यय	१	गती	व्ययति (वा) व्ययने	य
व्यय	१०	क्षेपे	व्याययानि	क
व्यय	१०	वित्तममृत्सर्गे	व्ययति धनं व्ययशीलः	क त
व्युप	१०	उत्तमर्गे	व्योपयानि रोगवानोपधं	क
व्युम	४	हानौ-दाहेच	व्युम्यति	य ईर्
व्युस	४	विभागे	व्युम्यति	य
व्ये	१	संवरणे	संव्ययानि (वा) संव्ययने स्तनं वस्त्रेण नारी	ल
व्रज	१	गती	व्रजानि व्रजः	
व्रज	१०	संकुनौगतीत्यागेच	व्रजयति	क
व्रण, व्रण	१	राब्दे	व्रणति	
व्रण, व्रण	१०	गात्रविचूर्णे	व्रणयानि भोष्मं शरैरर्जु- नः, व्रणः, व्रण	क त
व्रथ	६	छिदने	वृथानि मूढं पापी	श ओ उ
व्रि	४	तरणे	व्राथने वरं नारी	उ व











शानु.	गण.	मर्थ.	उदाहरण.	मनुष्य
शि	१	निशाने	शिनोति ( वा ) शिनुते	न म
शिश	१	विद्योपादाने	शिशुः	
शिश	१	मत्तौ	शिशवे	शिक्षा
शिश	१	मनौ	शिरानि	ह
शिश	१	आग्रामे	शिमानी	
शिम	२	अव्यक्ते शब्दे	शिमनि कुमुमं कृष्ण	६
शिम	२	अव्यक्ते शब्दे	शिमन	६
शिट	१-१०	अव्यक्ते शब्दे	शिवतेरमना शिमितं	
शिल	१	अनादरे	शिमने ( वा ) शिमयते	छ
शिप	१	उंचे	शिटति साधुं धेदः	कि क
शिप	१	हिमाया	शिलति ध्यानं विमः	क
शिप	१०	परिशोषीकरणे	शोपनि शेषः	श
शिप	७	विशेषणे	शोपयानि धन पुत्रायविता	क
शी	१	अग्रमे	शेष	
शीक	१-१०	आग्रामे स्वर्शे-से	शिशिनष्टि गुणैर्विष्णुं	बदित् ओ
शीक	१	ते-दीप्तौ	शेते मुग शयादः ( अथ	छ कनि
शीप	१	अग्रमे-१११	श ) मरुत शयादि	
शीप	१	रूपने	शीकति ( वा ) शीकयति	कि
			शीकने मेपो भूवि	
			शीमने	क क

आतु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्ण.
शश	१	शुभगती	शशति	शशः
शष	१	मधे	शषति	
शस	१	हिंसायां	शसति वंसं हरिः	उ
शस	२	राने	शसति	छ सु
शंस	१	आउपसर्गे इच्छाया	आशंसने मोक्षं मुनिः	इ क
शस	१	शुनो दुर्गन्तावधि	शंसति	उ
शम्भ	२	मन्त्रे	शम्भति	छ सु इ
शाश	१	व्याप्तौ	शाशति शाशा गगनं	क
शाड	१	मयापाया	शाडेन मुनिनं ननः	क क
शान	१	ननने	शशामनि (वा) शोशा मने शूत्र	ज
शाह	१०	शैवे	शाह्यते	क ग
शाछ	१	हस्यते	शाछते	क क
शाण	२	आउपसर्गे आशि- नि	आशाण्ये	क क क
शाम	१	आउपसर्गे आशि- नि	आशाण्ये	उ क
शाण	२	अनुवर्ण	शाण्ये	उ क उ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शि	१	निशाने	शिनोति ( वा ) शिनुते	न अ
शित	१	विद्योपादाने	शूलं	
शित	१	गतौ	शशते	शित्वा
शित	१	गमौ	शित्वनि	इ
शिष	१	आप्राणे	शित्तानि	इ
शिन	२	अव्यक्ते शब्दे	शिवानि कुमुभं कृष्ण	इ
शिन	१-१०	अव्यक्ते शब्दे	शिवानं	इ
शिट	१	अनादरे	शिवतेरमना	उ
शिल	१	उत्ते	शिवते ( वा ) शिवयते	कि क
शिष	१	हिमाया	शेटनि साधुं मंदः	क
शिष	१०	परिशेषीकरणे	शिलीत ध्यानं विमः	क
शिष	७	विशेषणे	शेषति शेषः	क
शी	२	स्वप्ने	शेषयानि धन पुत्रायापिना	क
शीक	१-१०	आगर्पणे स्पर्शे-से	शेषं	क
शीक	१	के-दीप्तौ	विशिनष्टि गुणैर्विष्णुं	क
शिम	१	मेचने-स्पर्शे	शिते सुखं शयानः ( अथ	क
	१	कृत्यने	वा ) मंदले शयामि	क
			शीकति ( वा ) शीकयति	क
			शीकते मेघो भूवि	क
			शीमते	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	समुच्चय.
शील	१	समाधी	शीलति	सुशीलः मि
शील	१०	उपधारणे— म- स्यासे—अतिशयने	शीलयति	नीलनिचोलं क त
शुक्	१	गतौ—स्पर्श	शुक्कति	
शुच	१	प्रतिपाते	शोचति शोचना शोक	
शुच	१	शोके	शोचति शोकः शुचिः	
शुच	४	पूतिभावे—विशरणे	शुच्यति ( वा ) शुच्यते	य म इ
		हिन्दे	निपसा विप्रः	
शुच्य	१	अभिपवे	शुच्यति	इ
शुठ	१	शोषणे	शुठति	शुंठी इ
शुठ	१०	शोषणे	शुठयति शुंठी मनः शुंठी	क इ
शुठ	१	खांठने प्रतिपातेन	शुठति	
शुठ	१	खांठने	शुठति	इ
शुठ	१०	आलम्ब्ये	शुठयति	क
शुठ	१०	संस्कारगत्या	शुठयति	क इ
शुध	४	शोचे	नर. शुद्धयति सत्संगात्	य ल औ
शुध	१	शुद्धौ	योगः शुंधति सत्त्वेन शुधः	
शुध	१-१०	शुद्धौ	शुंधेन ( वा ) शुंधयते	कि च
शुन	१	गती	शुनति शुनकः	श
शुम	१	भासने	शोभति न शोभति स- यामध्ये	

धातु.	गण.	अर्थ.	व्युत्पत्ति.	अनुवर्तमान.
शुभ	१	दीप्ति	शोभते शोभा	शुभ
शुभ	२	शोभायां	शुभति विषया विष	शुभ
शुभ	३	शोभति	शुभति	शुभ
शुभ	४	शोभायां	शुभते	शुभ
शुभ	५	भासेन	शुभति	शुभ
शुभ	६	भाषणे-संघाते-स- र्जने-वर्जने-अति स्पर्शने	शुभयति	शुभ
शुभ	७	भाषे-सर्गेण	शुभयति	शुभ
शुभ	८	वर्जने	शुभयति विधे विधाना शुभ	शुभ
शुभ	९	शोषणे	शुष्यति सस्या नविना शुषा शोष (न.) शुष्य का क	शुभ
शुभ	१०	विद्यांती	शुष्यते शुभ	शुभ
शुभ	११	वर्जने हिमायां	शुष्यते	शुभ
शुभ	१२	भाषे	शुष्यते शुष्येण शब्द नारी शुष्येणा	शुभ
शुभ	१३	रुमायां	शुष्यति शब्द	शुभ
शुभ	१४	प्रसवे	शुष्यति	शुभ
शुभ	१५	शब्दवृत्तायां	शुष्यति	शुभ



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शृव	१	उद्दि	शार्दति (वा) शर्दते निलन शिरः	उ म
शृष	१०	ग्रहसने	शर्षयति मूर्खं ब्रुवः	क उ
शृ	९	हिंसायां	शृणाति शीर्णः—णा—णं	ग मि
शेल	१	गतौ	शलति शलुः	ऊ
शेव	१	मेवने	शेवने	ऊ
शै	१	गनौ पाके च	शायते	
शो	४	निशाने	श्यति शित—ना—तं	य
शो	४	तनूकरणे	श्यति काष्ठं वर्द्धकिः	य
शोण	१	वर्णगत्योः	शोणति पद्मं शोण शोणितं	ऊ
शौट	१	गर्वे	शौटति मूर्खः	ऊ
शौढ	१	गर्वे	शौढति	ऊ
श्रुत	१	श्ररणे	श्रोतति	इ
श्रुत	१	श्ररणे	श्च्योनति जलं श्च्योनः	इ
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति नेत्रं	
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति	
श्ये	१	गतौ	श्यायते	इ
श्रक	१	गतौ	श्रंङ्कते	इ
श्रग	१	जने	श्रंगति	इ
श्रण	१	दाने	श्रणति	म

धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
अण	१०	दाने	आणयति गां राना- विश्राणन	क
अय	१-१०	अपने-मोले-बधे	अपयति ( वा ) अपययति कुमुदैः केशं नारी	कि
अध	१	अधे	अधयति	म
अध	१०	दीर्घस्त्रे	अधयति	क त
अय	१०	प्रातिहर्षमोक्षयत्त- यो	अययति	क
अय	१	दीर्घस्त्रे	अयने नौतौ	इ क
अय	१-१०	संदर्भे ( त० ) बधे	अययति ( वा ) अययति	कि
अय	९	मोचनं प्रातिहर्षयोः संदर्भे	अययतिमुमुक्षुं हरि भग- ति	ग
अध	१	प्रमादे	अधयति	उ
अध	४	वेदे तपसि	आम्यति मार्गे अधिक अधः धान्तः-ता-तं- अन्ति	य भ उ नि १९
आ	२	स्त्रेदे	आति	क
आ	१	पाके	आति-अययति यवागुं भित्तु	
आ	२	पाके	आनि शाक	छ म
आ	९	पाके	आयाति ( वा ) आयाति	ग म

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	मनुबन्ध.
श्वक्	१०	माषे	श्वक्कयति	क
श्वस	२	प्राणने	श्वसिनि-विश्रामः-श्व- सनं	ल लु ष
श्वि	१	गतिवृद्धोः	श्वयाति घर्मेण राजा	दु औ ऐ इ र
श्वित	१	सर्पे	श्वितते गेह-श्वन-ता-तं	ल आ ङ
श्विद्	१	शौक्ल्ये	श्विन्दते ज्ञानेन मनः	इ ङ
ष्वग	१	संवरणे	मगति	म ए
ष्व	५	हिंसायां	मघ्नाति	न
षच	१	समवाये	मचति साधुः	
षच	१	सेचने	सेचते जलेन भूमि	ङ
षच	१	गतौ	मचति	
षंज	१	संगे	सजनि तरुण्यां तरुण. आसक्त-तः-तं.	औ जि
पट	१	अवयवे	सटाति सटा	
पट्ट	१०	निकेतनहिंसा- लदानेषु	सट्टयति	क
पण	१	सम्भक्तौ	सनति	
पण	८	दाने	सनोति (वा) सनुते- विप्राय गां	द न उ
पद	१-१०	गतौ-आ उपसर्गे	आसादति (वा) आ- सादयति	कि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पद	१-९	विशरणगत्यवसाद	मोदति विरहेण पाप.	त लृ न ओ
पघ	९	निर्मायायां	विषादः	
पन	१	संमसौ	मघ्नोति	न
पन	८	दाने	मनति	
पप	१	संबन्धे	मनोति ( वा ) सनुते	द न उ
पंन	१	सर्पणे	मपति	
पम	१	वैज्ञान्ये	मंनति	
पम	१०	वैज्ञान्ये आलोचने च	ममति	क त
पर्न	१	अर्जने	मर्मति	सर्ज
पर्थ	१	गत्यां	मर्षति	
पर्व	१	सर्पणे हिंसायां च	मर्बति	
पल	१	गतौ	मलति	सलिलं
पस	२	स्पन्दे	मस्ति (सिंघे) हरिः	ल लृ र
पत्न	१	गतौ	मज्जति ( वा ) सज्जने	म उ
पस्त	२	स्पन्दे	मांस्ति	ल लृ र
पह	१-१०	मर्पणे	महाति (वा) साहयति	कि
			म एवाय नागः	
पह	१	मर्पणे	पापं न सहते रामा	न रु
पह	४	मर्पणे, चक्यर्थे	मदति	य

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पाथ			(इति साध)	
पान्त्व	१०	सामयोगे	सान्त्वयति	क
पि	९	बंधने	सिनोति (वा) सिनुते रु	न न
			प्यं यशोदा विषयः	
पि	९	बंधने	मिनानि (वा) सिनति चौरं	ग म
			राजा	
पिच	९	क्षरणे	सिचति (वा) सिचते	श प औ म
पिट	१	अनादरे	भेदति माधुं भंडः	
पिच	१	गत्यां	सेधति मधुरां कृष्णः	उ
पिच	१	शाम्ये मांगस्ये च	सेधति शिष्यं गुरुः सिद्धो-	ऊ
			यं मुनिः	
पिच	४	मराद्धौ	मिष्यति मुनियोगेन	य उ औ
पिम	१	दीप्तौ हिमने	मिषति	उ
पिछ	९	उच्छे	मिच्छति	ता
पिच	४	मनुमंताने	मील्यति कणां योगी-	य उ
			मीरनं	
पु	९	अमिश्रवे मन्यने च	मुनोति (वा) मुनुते सोम-	न न
			यता निमः	
पु	१	प्रमत्ते मनौ	प्रमथति पुत्रं नलि-म	
			मपः	

धातु.	गण.	भाष.	उदाहरण.	मनुष्य
पु	२	प्रसवे, ऐश्वर्ये	प्रसोति पुत्रं प्रसवः प्र-	ल
पुह	१०	नीजघे, अनादरे	मुनि	क
पुभ	१	दीप्तो हितने	मुट्यति	श
पुर	१	भैरवयोः	मुभति	य ल
पुह	४	तृप्तो, शक्तौष	मुभति	ल क ओ
पू	२	प्राणि गर्भविमो-	मुग्रति	य क ओ
पू.	४	चने	प्रमुने देवशी कृष्ण	श
पू	४	प्रसवे	मृयते मृगं धर्म	य क ओ
पूद	१	सिंघे	मृयति	श
पूद	१	क्षणने निरामे	मृदने चोर रामा मृदः	क
पूर	१०	आश्रुतिहरयोः नि	मृदयति	य क इ
पूरि	४	रातिष	मृयंते	
पूर्य(वा)	१	रतंभे—हिते	मृयंति	
पूर्य	१	अनादरे	मृयति ( वा ) मृयंति	
पूर्य	१	इष्यार्थे	मृयति पुत्रं साध्वी	
पू	१	प्रसवे	मेकने	
पूक	१	मर्षणे	मिश्रति	
पूक	१	वालयतोः		

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	सेवने	नीचं समृद्धमपि सेवति ( वा ) सेवने नीचः	ऋ ङ अ
पे	१	सये	सायति	
पो	४	अन्तकरणे	स्यति कालो लोकं	य
एक	१	प्रतिपाते	स्तकनि	म
एग	१-२०	संवरणे	स्तगति ( वा ) स्तगयति	ए मि
एन	१	शब्दे	स्तनति	मि
एभ	१	प्रतिबन्धे	स्मंभने पापात्पुत्रं पिता स्मंभः	इ ऋ
एभ	१	वैहृद्ये	स्ममति	
एभ	१०	वैहृद्ये	स्ममयति	क त
एळ	१	स्मिपत्तौ	स्मलति	ज
मृक्ष	१	गती	मृक्षति	
मृह	६	वये	मृहति	ता उ
मृह	६	वये	मृहति	श उ
टिप	१	आम्कदेन	मिघने पथिकं मृष्टि.	न ण
टिप	१	सरणे	मिपते मयं घटान्	ह ऋ
टिम	४	आर्द्रा भावे	मिष्यति तेन देह	य
टोव	१	निष्मने	मिषति	उ
टोम	४	आर्द्रा भावे	मिष्यति तेन देह	य

धातु.	राज.	अर्थ.	उदाहरण.	धनुषन्ध.
दृ	२	स्नुती	स्नेहि ( वा ) स्नुते स्नव स्तुतिः	म ल
द्रु	१	द्रमदे	द्रोषणे इत्यनेन मनः	ह
द्रु	१०	उद्ग्राये	द्रोषयति	क
द्रु	१	द्रोषे	द्रोषणे नापो विद्यया द्रोषणे बृद्धशीतम्	
दृ	४	उच्छ्राये	द्रुष्यति	प १२
द्रे	१	क्षरणे	द्रेपणे मत्तं घटान्	ह श
द्रे	१	निरमने	द्रेषति	
द्रे	७	रेष्टे	द्र्यायति	
द्रे	१	रिष्टणे	द्र्यायति	
द्रे	१	राब्धमंषाणे	द्रेष्यति लोष	
द्रे	१	मंषरणे	द्र्ययति	म ल
द्रे	४	निशोसे	द्र्ययति	प ल मि उ
छा	१	गतिनिवृत्तौ	निष्ठानिषिद्धेभ्युनि— स्थान	नि
छि	१	निरमने	छिषति	
छि	४	निरमने	छिष्यति भुक्तमसंबालम्	प उ
छि	१	निरमने	छिषति	
छ्य	४	निरमने	छ्ययति	उ प
छ्या	१	नांषे	छ्यानि मंषायां क्त्वा	ल





धातु.	गण.	भर्ये.	उदाहरण.	अनुबन्ध
संकेन	१०	आमंत्रणे	संकेनयति रतये कामिनी	क
सग	१	पंथरणे	कामुकं	म ए
संग्राम	१०	युद्धे	संगति	क त क
सघ	९	हिंसायां	संग्रामयते—संग्रामः	न
संज	१	सर्पणे	संग्रोति	क त क
सट	१०	प्रकाशने	संजति	न
सट्ट	१०	हिंसायां	सटयति	क त
सट, स्पठ	१०		सट्टयति	क
सत्र	१०	सन्तानक्रियायां—	(इति शठ—धठ	
सप	१	संबन्धे—सन्तती	सत्रयते पथिकेभ्यो धार्मि-	क त क
संभर	११	संबन्धे	कः, सत्री, सत्रं	
सभाज	११	पंथरणे—छायायां	सपति	ट
संभूयस्	१०	प्रतिस्तेकायां दर्श-	संबर्ष्यति गुरुदर्शनाद्वधूः	
सम्ब	११	निष्ठे	समानयति गुरुं शिष्यः स-	क त
सम्ब	१	प्रभूतभावे	भजनना	ट
सर्ज	१०	सर्पणे	संभूयस्यति पयोवारिणा	क
सर्व	१	सम्बन्धे	सम्बति	
	१	अर्जने	सम्बयति	
	१	सर्पणे	सर्वति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सह	४	शक्ती	सह्यति भ्रवहने वामुकिः ( इतिपह )	य
साट	१०	प्रकाशने	साटयति	क त
सांत्व	१०	सामप्रयोगे	सांत्वयति शोकाकुल- ज्ञानो	क त
साध	४	संसिद्धौ	साध्यति ज्ञानेन यति. सिद्धः	य उ
साध	५	संसिद्धौ	साधोति योगेन मुनिः	न औ
साम	१०	सांत्वने, प्रयाणे	सामयति बालं पयसापिता सामः	क त क
साम्ब	१०	सम्बन्धे	साम्बयति	क
सार	१०	दीर्घत्ये	मारयति सारः	क त
मिच	६	क्षरणे	मिचति ( वा ) सिंचने जलेन गेहं विज्रासी-सेकः- अभिषेकः	श प म औ
मिम	१	हिमाया	मिमनि कुमत्री राजानं	उ
मीक	१	मेके गत्यां	मीकने	ह ऋ
सीकृ	१-१०	आमर्षे	मीकृनि ( वा ) सीकृ- यति	कि
मु	१	गतौ ऐश्वर्ये श्रमने	मुनानि	न न
मु	५	मंत्रादेर्दृष्टीदामपेयु	मुनानि ( वा ) मुनने	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	भानुवन्ध.
मुल	१०	नत्क्रियायां	मुल्यति	क त
मुल	११	नत्क्रियायां	मुल्यति घनी संसारे	ट
मुट	१०	अनादरे	मुट्यति	क
मुम्भ	१	मुनो हिंसायां	मुम्भति	
मुर	६	रेश्वर्य्य क्षाप्तघोः	मुरनि राजा मुरः अमुरः ( इतिपू.)	श
मू				
मूक्ष	१	अनादरे आदरेष	मूक्षति	
मूच	१०	पेङ्गुन्ये	मूचयति परदोषं खलः मूचकः	क त
मूत्र	१०	भवमोचने वेष्टनेच	मूत्रयति मूत्रणे कलशं पूरोषाः मूत्रं	क त
मूर	४	हिंसास्तंभनयोः	मूर्यते शिविविच योगी	ळ य
मूर्श्य	१	अनादरे ईर्ष्याया	मूर्श्यति	
मूष	१	प्रसवे	मूषति	
मृ	१	गती	मरनि तीर्थं मुनिः	
मृ	६	गती	ससर्त्ति	लि र
मृ	१०	स्तुती	सरयति	क
सृज	६	विसर्गे	सृजति विश्वंवेधा	श औ
सृज	४	विसर्ग-उत्पादने	ससृज्यते पिता पुत्रं सृ- ज्यते विश्वंविधाता सृष्टिः	
सृप	१	गती	सर्पति सर्पः	ल औ



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्तूप	४	ममुच्छ्राये	स्तूप्यति धान्यं—स्तूप	य इर
स्तु	१	आच्छादने ( त. )	स्तृणोति ( वा ) स्तृणु-	न म
		नीतिरस्ताप्राणनेषु	निर्या सप्ता देहं	
स्तु	९	आच्छादने	विस्तृण-ता-तं	ग म गि
			स्तृणानि ( वा ) स्तृणी-	
			ते गमनं मेघं स्तीर्ण-	
			णा—णं	
स्तुस	१	गतौ	स्तृशति	श उ
स्तुह	१	वधे	स्तृहति	ग नि
स्तृ	९	आच्छादने—वंपष	स्तृणानि	श उ
स्तृ	१	वधे	स्तृहति	क त
स्तेन	१०	प्राप्त्यं	स्तेनयति धनं स्तेनः	क
स्तेप	१०	संवे	स्तेपयति	
स्त्ये	१	नाच्छादयति	स्त्यायति लोक	स्तोमः क त
स्तोम	१०	शुभापायां	स्तोमयति	म ए
स्पग	१	मंत्रारणे	स्पगति	म
स्पक	१	मंत्रयं—स्थाने	स्पलति धर्मं मुनिः स्पल-	म
			स्थाने	
स्पुल	१०	परिवृंहणे	स्पुल्यति स्पूलः स्था	क त ह
स्त्रिह	१०		( इति प्लिह )	क
स्पद	१	किंचिच्छने	स्पंदतिवातेन	ह

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
स्पर्द्धे	१	परपराभवेज्यां	स्पर्द्धन्ते कर्णोन्निनं स्पर्द्धां	क
स्पर्श	१०	ग्रहणे - छेपे	स्पर्शयते	क ह
स्पर्श	१	नाशने ग्रंथेन	स्पर्शति ( वा ) स्पर्शते	म
स्पृ	९	मीनिरक्षाप्राग्नेषु	स्पृणोति	म
स्पृश	९	मृग्यशं	स्पृशति पुत्रं पिता	मा ओ
स्पृष्ट	१०	इप्साया	स्पृष्टयति गंगाये मुनिः	क त
स्फट	१	भेदे	स्फटति	इ
स्फट	१०	भेदे	स्फटयति	क
स्फट	९	मृत्ती - चटे	स्फटति	श
स्फट	९	मृत्ती - वाते.	स्फटति	श
स्फाट	१	तृद्धे	स्फाटने स्फाटः स्फा- ति ( वा ) स्फाटति स्फाटनः स्फाटयान्	ई म
स्फिट	१०	मृत्ती - अनादुर्गद्विने	स्फिटयति	
स्फुट	१	विह्वले	स्फुटने ( वा ) स्फुटति स्फुटयति	म

धानु	राज.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
शिकट	१०	हिंसायां	शिकटयति नकुल. सपं ने	क
रकुट	१	विक्राने	रकुटनि पुष्पं रकुट टा ट	श दि
रकुट	१	विसरणे	रकुटनि पुष्पं	इ
रकुट	१०	विसरणे	रकुटयति	क त
रकुट	१०	भेदे	रकुटयति	क
रकुट	१०	परिहासे	रकुटयति भगिनी पति रपाल	क इ
रकुट	१०	भनादरे	रकुटयति	क
रकुट	१	विक्राने	रकुटयति	इ
		विसरणेष		
रकुट	१	मेषुसौ	रकुटनि	श
रकुट	१०	परिहासे अनुपभा- रणेष	रकुटति ( का ) रकुट यति	इ वि
रकुट	१	गुरणे-संषडनेष	रपुरनिनेत्रं	श दि
रकुट	१	विष्णुनी	रकुटनि विष्णु भोगी	आ
रकुट	१	रजनिर्षेपे	रकुटनि वज्र	हु ओ आ
रकुट	१	रकुटीं वये वले	रकुटनि	श रि
रिम	१	विष्णवे	रमयने रमय. म्दिने	इ
रिम	१०	भनादरे	रमययति	क





धातु.	संज्ञ.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्त्य.
ग्रीव	४	गतिरोपणयोः	ग्रीव्यति रविः पयः ग्री- व्यतिथाश्रये गंगा ति व्यामु	उ प
गु	१	भूमी-गती	गुवति	
ग्रेफ	१	गती	ग्रेफते	क व
गि	१	गार्क	ग्यावति वृग्ध	
गिलट	१	ग्रेटे	गलेटति	
गवग	१	गर्वणे	गवगति	१
गर्वम	१	भारिगमे	ग्वमते	क ओ ख
गवद	१	आस्वादने	गवदने	क
गवद	१०	आस्वादने	( आ उपसर्गे ) आस्वाद यति वयोयति	क
गवन	१	गच्छे	गवयति	ण
गवन	१०	गच्छे	गवयति	क त
गवन	१	गच्छे	गवयति ( वा ) ग्वान- यति भरी मटः	नि
गवन	१	भवतंसने	गवनयति केश वृद्धमे गरी	क
गवव	१०	भारोपे	गववदत्युनं कर्णः	क त
गवव	१०	भारोपे	गववयति	क त
गवद	१	आस्वादने	गवदने वृद्ध वाकः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्वर्त्त	१०	गतौ आनेके	स्वर्त्तयने	क
स्वस्क	१	गत्यां	स्वस्कते	ह
स्वाद	१	आस्वादे	स्वादते स्वादु	
स्वृ	१	शब्दोपनापयोः	स्वराति	
स्वृ	९	हिंसने	स्वृणाति ( वा ) स्वृणति	ग गि न
स्वेक	१	गत्या	स्वेकने	ह कृ
हट	१	त्विष्ये	हटनिचद्रः हाटकं	
हट	१	बलात्कारे ( वा )	हटनिगना	
		कीलचन्धे, धुतो		
हद	१	पूरीपोत्सर्गे	हदतेरोगी	ह
हन	९	हिंसागत्यो	हन्ति हनति अहनत्	ल
			नघान कंसंकिलवामुदेवः	
हम्म	१	गतौ	हम्मति	
हय	१	गतौ कृमे	हयति हयः हायनं	
हय्य	१	कलमे-गतौ	हय्यति	
हछ	१	बिछेले	हछति	
हस	१	हसने	हसति हसः हासः हास्यं	ए
हा	३	गतौ	निहीते	लि ह ओ
हां	३	त्यागे	महाति गेहं यतिः	लि क ओ
हि	५	गती वर्द्धने	हिनोति	न
हिक	१	अव्यक्तेशब्दे	हिकति ( वा ) हिकने	ज



धातु	गण.	मर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हृ	३	प्रमथकरणे	नहति परनामं दुष्टः	नि १
हृप	१	प्रतीक	हृपानि सडः सायुं	उ नि
हृप	४	नृष्टी	हृपानि हृष्टः य टं हृष्टिः	य उ नि हृ
हेट	१	नाचायां	हेटति	
हेउ	१	नाचायां	हेउनेरिपुं वली हेठः	ह क
हेड	१	विष्टने	हेडति	म
हेड	१	अनादरे, गतौ	हेडने	क ह
हेप	१	गतौ	हेपने	क ह
हेप	१	अव्यक्तेशब्दे	हेपने हयः हेपा	क ह
होड	१	अनादरे, गतौ	होडेने	क ह
होड	१	गतौ	होडेने	क ह
नु	२	अपनयने	नुतेदुर्गनं मुननः	ल ह
लल	१	चलने	ललति	म
ल्लग	१	संवरणे	ल्लगति	म ऐ
ल्लणी	११	रोपे लल्लाय्याच	ल्लणीयनेकल्लहांतरिताप- रासकाय	ह ट
ल्लेप	१	गतौ (अपवा) हय	ल्लेपते ल्लेपति	क ह
ल्लस	१	शब्दे	ल्लसति	
ल्लाद	१	अव्यक्तेशब्दे	ल्लादतेमेवः	ह
ल्ली	३	लज्जायां	ल्लिहति यवनसेवयाद्विन-	लि

प्रा.त.	संज्ञ.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्ण.
ह्रीति	१	उज्ज्वायां	ह्रीति	
हृद	१	गती	हृदते	अ इ
हृद	१	गती	हृदते	अ इ
ह्रीद	१	गती	ह्रीदते	अ इ
स्वग	१	संवरणे	स्वगति	म ए
स्वपं	१०	व्यकायांवाचि	स्वपयनि संस्कृतं मनीषी	य
स्वस	१	शब्दे	स्वसति	
स्वाद	१	मुखे स्वने	स्वादते पिता पुत्रेण आ- स्वादः	इ
हृ	१	चलेन	हृति	इत्यति
हृ	१	ह्रीदित्ये संवरणेन	हृति तलः	म
हृ	१	स्पर्द्धायां-वाचि	हृयति ( वा ) हेयते वाण- रः कृष्णं आहृयते पुत्रं पिता आह्वान ( मुखाणि )	अ ए
उह	१	महती	ओदति	
उह	१	आपाते	उदति	
उर	१	गती	ओरति	
उल	१	दोहे	ओलति	
अश	१	गतिस्मृत्योः	अशति	



धातु.	पण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मट	१	मादे	मटति	
युष	१	मज्जने	योषति योषित्	
रिफ	१	कृत्सने	रेफति रेफः फा फं	१
रश	१	स्वने	रशति	
छत	१	घाते	छतति	
लुठ	१	विमर्दे	लुठति	
बट	१	स्नेहे	बटति	
बह	१	आरोहणे	बहति	
विष	१	खे	विषति	
शाछ	१	गती	शाछति	
शिक	१	मेवने	सिकति सिकता	
भातशात	१०	मूले	मानयति ज्ञानयति	
मुद	१	दोषे	मुन्दति मुन्दरः रा, रं	१
रकंभ	१-२	रोषने	रकंभोनि (वा) रक-	न ग उ
रकुंभ	१-२	रोषने	रकुंभोनि (वा) रकु-	न ग उ
स्तंभ	१-२	रोषने	स्तंभोनि (वा) स्तंभानि	न ग उ
स्तुभ	१-२	रोषने	स्तुभोति (वा) स्तु-	न ग उ
			भानि	





# अनुबन्धसंकेतार्थमूचना.

अनुबन्ध	अर्थ.	संकेतार्थ			
		न	प्र	प	त
अ	अक्षरभकारउच्चारणार्थ	२	१	२	१
आ	आकारेहप्रपुस्तकस्यादौ आदित्येति इहभावार्थम्	३	२	३	२
इ	इदित्थं भेदनीत्यादौ इतिनोनुम् धा साभिनिनुमर्थम्	४	३	४	३
ई	इतिव्य अण्युक्तम् अण्योनीम् इत्या दौ इतिभेदेति स्वरद्विविधरूपार्थम्	५	४	५	४
ई	इतिव्य उक्तउक्त इत्यादौ आदिना निष्ठाया इतिदण् निवधार्थम्	६	५	६	५
उ	उदिद्वय दामिवा दाम्वा इत्यादौ उ दिमावा इतिद्वय विवधार्थम्	७	६	७	६
ऊ	उदिद्वय ववरानि मूनि भुगनि धृ दिनोवा इति भेदा भाषण इत्यादौ इहविधरूपार्थम्	८	७	८	७
ए	एदिद्वय अण्युक्तम् इत्यादौ एणां विद्यान् इतिभाषिणि एहविधरूपार्थम्	९	८	९	८
ए	एदिद्वय एण्युक्तम् इत्यादौ एणां विद्यान् इतिभाषिणि एहविधरूपार्थम्	१०	९	१०	९
ए	एदिद्वय अण्युक्तम् इत्यादौ एणां विद्यान् इतिभाषिणि एहविधरूपार्थम्	११	१०	११	१०
ए	एदिद्वय अण्युक्तम् इत्यादौ एणां विद्यान् इतिभाषिणि एहविधरूपार्थम्	१२	११	१२	११



# अनुबन्धसंकेतार्थमूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	संकेतार्थ		संख्या	
		प्र	प्र	प्र	प्र
अ	अइतिअकारउच्चारणार्थ	२	१	२	१
आ	आकारस्वप्रकृतइत्यादौ आदितश्चेति इहभाषार्थम्	१	२	१	२
इ	इदित्त्वं नंदनीत्यादौ इदितोऽनुम् वा तौगितितोऽनुम्	२	१	२	१
ई	ईदित्त्वं अच्युनन् अच्योनीन् इत्या- दौ ईदितोऽपेति ईदित्त्वादिष्वर्थम्	२	१	२	१
ई	ईदित्त्वं उक्तउक्तः इत्यादौ ईदितो निष्ठाया इतिइण् निष्ठाया	१	०	१	०
उ	उदित्त्वं क्षमिष्या क्षमिष्या इत्यादौ उ दितोऽपेति उदित्त्वादिष्वर्थम्	१	०	१	०
ऊ	उदित्त्वं इतिमूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति- दितोऽपेति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति	२	१	२	१
ऋ	ऋदित्त्वं अदुःखेति इत्यादौ ऋदितो- पिदित्त्वादिष्वर्थम्	२	१०	२	१०
ॠ	ॠदित्त्वं अदुःखेति इत्यादौ ॠदितो- पिदित्त्वादिष्वर्थम्	२	१०	२	१०
ऌ	ऌदित्त्वं अगमत् अगमत् इत्यादौ पुषादिष्वर्थम्	२	१	२	१



# अनुवन्धसंकेतार्थमूचना.

अनुवन्ध.	अर्थ.	कीमुदी		सारस्वत.	
		पृ	प	पृ	प
अ	अ इतिम्वादिमंशकप्रथमगणांतःपाति- ज्ज्यादिगणमूचकः संकेतः	२	१	०	०
ब	भित्तिरुज्जोति ऊर्जुने इत्यादौस्वरित- मिनः कर्षभिप्राये त्रिग्याकले इत्युम- यवदार्धम्	२	१	२	१
जि	जीर्ण इत्युमो जीत स इति वर्तमानेष्ट प्रत्ययार्थम्	२	२	१	२
ट	ट इति षोडशप्रकरणरूपक कंडू- दिगणमूचनार्थः भूकेतः	२	१६	०	०
टु	ट्टित्त्वंपथु रिग्यादौ ट्टिनोऽभुम् इति अभुम् प्रत्ययार्थम्	२	८	१	६
ड	ड्डित्त्वं पवित्रममिन्यादौड्डितः त्रिप्र- ति प्रत्ययार्थं केचित् त्रिमम् इति वदन्ति	२	८	१	६
ण	ण इतिम्वादिमंशकप्रथमगणांतःपाति- कणादिगण मूचकः संकेतः	२	१	२	१
त	त इति अंते अकारस्योपायाय मूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
द	द इतिननादिमंशकअष्टमगण मूचकः संकेतः	२	८	२	१९













पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अनुच्छ.	शुद्ध.
"	११	कः	कू
"	"	कृणाति कृणीते	कृणाति कृमीते
२१	१	ना नं	शा ल
"	"	परिवेदने	परिवेदने
"	८	ता तं हन्ति	न्ता न्तं हान्तिः
"	७	पीष	शीष
"	११	वृच्छन्मीषेन	वृच्छन्मीषेन
२६	"	सञ्जयाति	सञ्जयाति
"	१	शास्त्री	शास्त्री
१७	१४	सि	शी
"	१	माषेने	माषेने
२८	१७	अमः	अमः
२९	१	सुपथं वा धं	अनः
"	१	खल	सुख्यं व्या व्यं
१०	१	खट्वयि	खल
"	१	दशने	खट्वयि
"	"	खर्च	दशने
"	"	खर्चति खर्चः	खर्च
"	४	खर्च	खर्चति खर्च
"	"	खर्चति	खर्च
३२	१२	गर्भ	खर्चति
			गर्भ

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१६	९	कशति समूलकाशं	कपति समूलकापं
"	८	बध्ननयोः	बन्धनयोः
"	९	कालोपदेशे	कलोपदेशे
१६	१६	मयभीषयोः	मयभीषणयोः
१७	१६	काञ्ची	काञ्ची
"	१८	संकोच	संकोचः
१८	१	कुञ्ज	कुञ्च
"	७		१०
"	१८	कुण्डते	कुण्डते
१९	१०	स्मृते	स्मृतौ
"	१४	कुम्भ	कुम्भ
२०	७	रुण्णानि	कुण्णांति
"	१२	वीष्मारण	विस्मारणे
२१	११	कृञ्ज	कृञ्जते
२३	७	क्रन्दते	क्रन्दते
"	९	आप्रत्यये	अप्रत्यये
२४	१	कृञ्च	कृञ्च
"	"	कौटिल्यार्षो भावयोः	कौटिल्यार्षोभावयोः
"	"	कृञ्चेति	कृञ्चति
"	९	या घं	दा दं
"	९	दुर्गन्धादृत्वयोः	दुर्गन्धादृत्वयोः

पृष्ठांक.	पंक्त्येक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	११	क	क
"	"	कृणाति कृणाति	कृणाति कृणाति
११	१	मा न	मा ल
"	"	परिवेदने	परिवेदने
"	८	ता तं हन्ति	न्ता न्त हन्तिः
"	७	शीव	शीव
"	११	रुच्छभीवेन	रुच्छभीवेन
"	"	सज्जयाति	सज्जयाति
११	५	शाक्ती	शाक्ती
"	१४	शि	शी
१७	१	माषेने	माषेने
"	१७	जय.	जनः
१८	५	सुपर्ध चा ध	सुग्धः क्वा क्ध
१९	१	सल	सल
"	१	सहृयति	सहृयति
१०	१	दशान	दशान
"	"	सर्व	सर्व
"	"	सर्वति सर्व	सर्वति सर्व
"	४	सर्व	सर्व
"	"	सर्वति	सर्वति
११	११	सर्व	सर्व

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	"	गर्जति	गर्जति
"	१३	गर्ज	गर्ज
"	"	गर्जयति	गर्जयति
"	१४	गर्ह	गर्ह
"	"	गर्हति	गर्हति
"	१५	गर्हयति	गर्हयति
"	१५	गर्ह	गर्ह
"	१६	गर्हयति	गर्हयति
"	१७	गर्भ	गर्भ
"	"	गर्भ	गर्भ
"	१८	गर्भ	गर्भ
"	"	गर्भति	गर्भति
३२	१	गर्भ	गर्भ
"	१६	शब्दे	अव्यक्तेराब्दे
३४	२	गुप्ता	गुप्ता
"	३	गुप्यति	गुप्यति
"	५	कोदे	कीदायां
"	१९	गुर्द	गुर्द
"	"	गुर्दति	गुर्दति
३५	१	गुर्द	गुर्द
"	"	निकेतने	पूर्वनिकेतने

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अक्षर.	श्रुत.
"	७	गुह्यति	गुह्यति
"	७	गुह्य	गुह्य
"	७	गुह्यते (क) गुह्यति	गुह्यति ( वा ) गुह्यति
"	१९	गतिचालयोः	गतिचालनयोः
१९	१	अन्वेष्टायां	अन्वेष्टायां
१७	९	घम्य	घम्य
"	"	घम्यति	घम्यति
"	११	घटयति	घाटयति
"	१३	घट्टः	घट्ट
"	१७	घट्टे	घट्टे
"	"	घट्टति	घट्टति
१८	१३	शङ्के	अविशङ्के
"	१८	पू.नि शीघ्रः	पू.ने शीघ्र
१९	१९	व्यपते	व्यपते
"	"	व्यपति	व्यपति
४०	९	व्यपति १	व्यपति ( वा ) व्यपति १०
"	"	व्यपति	व्यपति
"	१३	व्यपति ( वा ) व्यपति	व्यपति ( वा ) व्यपति
४१	४	अस्तंते	अस्तंते



पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	शशुस.	शुस.
॥	६	चर्चते	चर्चति
॥	॥	चर्च	चर्च
॥	॥	परिमाणतज्जनयो.	परिमाणमर्त्तनयोः
॥	॥	चर्चति	चर्चति
४१	७	चर्च	चर्च
॥	॥	चर्चयते चर्चा	चर्चयते चर्चा
॥	८	चर्च्य	चर्च
॥	॥	चर्चति	चर्चति
॥	९	चर्च्य	चर्च
॥	९	चर्चति ( वा ) चर्चय- ति चर्चणं	चर्चति ( वा ) चर्चयति चर्चणं
४२	९	चययति	चययति ( वा ) चय- यति
॥	११	संवेदने	संवेतने
॥	१७	हावकृतौ	भावकृतौ
४३	१	आमर्षणे	आमर्षणे
॥	८	न्यसने	न्ययने
॥	११	चाटयति	चोटयति
॥	२०	हावकरणे	भावकरणे
४४	६	चुव	चुव
॥	७	चुर	चुर

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अध्याय.	श्रुति.
११	११	हावकरणे	भावकरणे
४९	१	हानी	हानि
११	१०	उर्जने	उर्जने
११	११	११	१०
४७	७	वर्ध	वर्ध
११	११	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
११	९	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
४७	९	मर्ज	मर्ज
४७	११	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
११	११	मर्जति	मर्जति
४८	९	ममयति	ममयति ममयि वा
४९	४	परितर्कणे	परितर्कणे
११	७	मूर्ध्व	मूर्ध्व
११	११	मूर्ध्वति	मूर्ध्वति
११	११	न्यस्तरे	न्यस्तरे
११	१४	मार्ज	मार्ज
११	११	मार्ज	मार्ज
११	१७	मरति ( वा ) मरयति	मरति ( वा ) मरयति
११	९	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
११	११	होयति	होयति
११	१९	हृदयति हृदयि हिरद	हृदयति हृदयि हिरद

पृष्ठांक.	पत्रपंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१२	१९	नत्वति	नद्धति
१३	९	प्रवृत्तशब्दे	प्रवृत्तशब्दे च
"	१०	णद्धे	णद्धे
"	१०	नद्धः	नद्धे
१४	१	शुद्धी	शुद्धी
"	"	प्रणिक्ते	प्रणिक्ते
"	९	निस्ते	निस्ते
"	१२	स्थीत्यै	स्थीत्यै
१५	६	तगति	तगति
"	७	संकुची	संकुचने
१६	३	तपेत ( वा ) तापयते	तपति ( वा ) तापयति
"	११	तर्जयते	तर्जयते
"	१३	तर्ज्ये	तर्ज्ये
"	"	तर्ज्येति	तर्ज्येति
१७	४	निषासायां	गतौ
"	५	निषासायां	गतौ
"	६	स्कन्दनेच	आस्कन्दने च
"	८	क्षमाय च	क्षमायां च
"	१६	वानां	वातां
१८	२	समाप्तौ	कर्मसमाप्तौ
"	४	गतिवृद्धिर्हिंसापूर्तेषु	गतिवृद्धिर्हिंसापूर्तेषु

पृष्ठांक.	पक्षयक.	अनुज.	शुद्ध.
"	१९	धृतौ	आपरणे
१९	४	तर्हने	तर्हने
"	७	तुपति	तुपति
"	११	योजने	भोजनेन
१०	१०	वरणे	स्वरणे
"	१०	तूर्यते	तूर्यते
११	१	तत्पंति ( त ) तत्पंयति	तत्पनि ( त ) तर्पयति
"	१०		१
"	१०	तूरति	तूरति
१२	१०	ग्रहनिषेधेपुतौ	ग्रहनिषेधे पुतौ
११	१	त्वक्षति	त्वक्षति
"	१	गतिकम्पयोः	गतिकम्पयोः
"	११	दक्ष	दक्ष
"	"	दधोति	दधोति
"	१६	दण्डनीपातने	दण्डनिपातने
१४	१२	दश	दश
"	११	दश	दश
"	१४		१
"	१७	दंसयते गार्त्रं	दंसयते दंसति वा ग
११	१	आर्जवे	आर्जवे
"	८	वर्दीकि	वर्दीकिः

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६६	१३	मेनादेशे च	मनादेशे च
६७	१२	सहजाय	सयज्ञाय
"	१	उपेतपे	उपनापे
"	१०	आदाने	आदरे
"	"	१-१	१-१०
६८	१	दफ	हंफ
"	"	दकति	हकति
६९	१	निद्राया	निद्रायां
"	४	द्राघ	द्राघ
"	"	द्राघने	द्राघते
"	१३	द्राहः	द्रोहः
"	१६	द्र	द्र
"	"	द्रायति. शत्रो लोकाः	द्रायति शत्रो लोकाः
७०	१	द्वेषति ( वा ) द्वेपने	द्वेषति ( वा ) द्वेपने
"	६	२	१
"	"	शुद्धी च	शुद्धी च
७१	१	१	१
"	१	अधारे	आधारे
७१	१२	हिमायां	हिमायां
७२	१	कपेन	कम्पने
"	४	केसरपुष्पमार्गं	केसरपुष्पमार्गं

पृष्ठांक.	पत्रदक.	अनुज.	शुद्ध.
११	११	कुंकुमे जन	कुंकुमेन जन
७१	४	धर्षयते	धर्षयते
११	८	कपर्दिनं	कपर्दिन
११	११	उत्क्षेपे	उत्क्षेपे
११	१७	ध्वणति	ध्वणति
७४	४	धाद	धाद
११	७	गतिर्धर्मयो	गतिर्धर्मयो
११	११	घनुर्धन्वी	घनुर्धन्वी
७१	१	याञ्चोपतापैश्वर्यामीः पु	याञ्चोपतापैश्वर्यामीः पु
११	९	याञ्चोपतापैश्वर्यामीः पु	याञ्चोपतापैश्वर्यामीः पु
११	९	सचने	सचने
११	११	न	न
११	१४	न	न
११	१०	पते गोगमने	पतगो गोगने
८०	८	भाषहार्ये	भाषां
११	१४	ह्रींशि	ह्रींशि
८१	८	शिभुः	शिभुः
८२	८	भीष्म	भीष्म
८१	७	पूषयति	पूषयति
८७	१	ककति	ककति
८८	२	वधने	वधने



पृष्ठांक.	पंक्त्यङ्क.	अग्रमुद्र.	शुद्ध.
११	२०	युध्यन्	युध्यन्ते
१०७	१	युषपते	युषते
१०८	९	पाशडी	पापडी
११	१४	रामश्य	रामस्ये
१०९	१२	रहयति	रंहति
११	१६	राघतेयुध्यायवीरः	राघते युध्याय वीरः
११	१४	मंमिद्धौ	युद्धौ
११०	९	रिक्तंगी	रिक्ते रोगी
११०	१०	कथनयुद्धनिन्दाहिसा-	कथनयुद्धनिन्दाहि-
		दानेषु	सादानेषु
१११	७	घृती	घृती
११	१७	गत्यालस्यास्तेयमोटे	गत्यालस्यस्तेयोमोटे
११२	३	गोप्य ( यथा )	गोप्य ( अपथा )
११	५	रुणद्धि	रुणद्धि
११	१२	रोहति मृत्तिकाया घटः	रोहति मृत्तिकाया घटः
११३	५	शुवे गतो य	शुवगती
११	१५		गती
११	१६		गती
११	१८	स्वादापने	आस्वादने
११४	८	भर्त्सने	भर्त्सने
११	९	भर्त्सने	भर्त्सने



पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११६	१	स्लेपणविलसयोः	स्लेपणविलासयोः
"	"	लपनि	लसति
"	८	मर्गे च	मर्जने
"	९	मर्गे च	मर्जने
"	९	छांजते	छानति
"	१६	१	१०
११७	१३	लुट	लुट
"	"	लुट्यनि	लुट्यति
११८	२	लुट	लुष्ट
"	२	लुटति ( वा ) लुट्यति	लुष्टति ( वा ) लुष्टयति
"	१०	लण्डयति	लुण्डयति
११९	१०	स्वलनेच	स्वलने च
"	११	पूर्वभावे स्तने च	पूर्वभावे स्वप्ने च
१२२	८	इप्ताया	ईप्तायां
१२३	९	वद्ध	वर्ध
"	"	पूत्तिछेदोः	पूत्तिछेदनयोः
"	"	वद्धयति	वर्धयति
१२४	१४	मुखाप्तिगतिसवोमु	मुखाप्तिगतिसेवामु
१२५	३	वाञ्छति	वाञ्छति
"	११	विछ	विच्छ
"	११	विछानि	विच्छायति



पृष्ठांक.	पंचयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	१६	इमीळ	स्मीळ
॥	॥	इमीळनि	स्मीळनि
१४०	१०	अवत्यामद्यताग्मञं	श्रुणोति
१४२	६	प्वग	पग
॥	१०	सेचते	सचते
१४३	३	सघ्नोति	सघ्नोति
॥	८	वेहृज्ये	अवेकस्ये
१४५	४	भेस्ययो	ऐश्वर्यदीप्त्योः
॥	६	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
॥	९	क्षेपे	प्ररणे
॥	१०	क्षणने	क्षरणे
॥	१३	पूर्य (वा) दूर्य	पूर्य ( वा ) दूर्य
॥	१७	वालगत्यो.	चलनगत्योः
१४६	८	वेहृज्ये	अवेकस्ये
॥	९	वेहृज्ये	अवेकस्ये
॥	१०	प्लु	प्लु
॥	१६	आर्द्रोभावे	आर्द्रोभावे
॥	१८	आर्द्रोभावे	आर्द्रोभावे
१४७	१	स्तीवि (वा) स्तुने स्ववः	स्तीवि ( वा ) स्तुनेवः
॥	२	प्रमादे	प्रमादे
॥	७	ष्टेव	ष्टेव

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	मध्य.	ग्रन्थ.
॥	७	ऐवति	ऐवति
॥	१२	स्थसति	स्थस्यति
१४८	१६	गात्रप्रसरणे	गात्रप्रसरणे
॥	१९	धैवण	धैवण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
॥	९	सन्तान क्रियाया	सन्तानक्रियाया
॥	११	सज्ज	सज्ज
॥	॥	अज्जने	अज्जने
॥	॥	सज्जति	सज्जति
॥	१७	सज्ज	सज्ज
॥	॥	सज्जति	सज्जति
१५१	१	ऐश्वर्य दीप्तयो	ऐश्वर्यदीप्तयोः
॥	७	सूत	सूत
॥	॥	सूतति	सूतति
॥	१०	सूतणे	सूतणे
१५२	१	आपवे उडने	आपवे उडने
॥	९	वर्णरज्जुन	वर्णरज्जुनः
॥	११	वृन्दने शाखा दृगोवृ-	वृन्दने शाखा दृगोवृ-
॥	११	शास्त्रान्तर्	शास्त्रान्तर्
॥	११	विशरे	विशरे
॥	११	वदवत्योः	वदवत्योः

शृङ्गांक.	पदशृङ्गांक.	मङ्गल.	शृङ्गा.
१६३	१	मृगुनेया मया देहं	मृगुने या मया देहं
"	४	आच्छादने	आच्छादने
"	१४	मनये-म्यानि	मनये म्यानि च
"	९	मृगानि	मृगानि
१६४	१०	मृगो	मृगो
"	११	मृगो	मृगो
१६५	२	विक्राने	विक्राने
"	३	विमरणे	विमरणे
"	४	विमरणे	विमरणे
"	८	विक्राने	विक्राने
"	१०	मृगयति	मृगयति
"	१३	मृग	मृग
१६६	९	मृग	मृग
१६६	९	मृग	मृग
"	७	मृग	मृग
"	"	मृग	मृग
"	८	मृग	मृग
१६७	९	मृग	मृग
"	११	मृग	मृग
"	१३	मृग	मृग
१६८	१	मृग	मृग

पृष्ठांक.	पक्षपक्ष.	अध्याय.	शुद्ध.
"	७	त्विति	त्विति
"	८	हट	हठ
"	"	हटनिराजा	हठति राजा
"	१०		
१९९	१	चोर भयात्तर.	चोरमयात्तर
"	९	हावकरणे	भावकरणे
"	१०	दानादनयो	दानादानयो
"	१२	सर्वप्रलयाग्निः	सर्व प्रलयाग्नि.
"	११	वेर्णव	वरेण व
११०	१	हृष्यति	हृष्यति



